निवेदन-

इस पुस्तक मे पूर्वाचार्यों द्वारा रचित महाप्रभाविक चमत्कारिक स्तोत्रो का प्रकाशन किया गया है। स्तोत्रों के संग्रह की हुई पुस्तकें प्राय. करके छपती ही रहती है। क्योंकि प्रायः करके बहुत से भाई बहिनें नित्य पाठ करते हैं इस लिए ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता अधिक रहती है। साध्वीजी महाराज श्री जसवंत श्रीजी मनमोहन श्रीजी व मीलापश्रीजी ने अपने भक्त गणों को उपदेश देकर इस पुस्तक के प्रकाशन के निमित द्रव्य इकट्ठा किया और मेरे जुम्मे इस पुस्तक के प्रकाशन का भार डाला गया। मगर बीकानेर में प्रेसें आवश्यतानुसार कम है और उनके पास काम भी अधिक रहता है। इस लिए प्रकाशन मे कुछ अधिक समय लग गया।

आशा है पाठक गण इस पुस्तक से नित्य पाठ करके लाभ लेंगे।

निवेदक
बची चम्पालाल जैन
सम्पादक 'अभय संदेश" बीकानेर

(चवदे पूर्व का सार)

श्री नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमोक्कारो
सव्व पाव पणासणो। मंगलाणंच सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

खरतर गच्छीया-साध्वीश्रेष्ठा-पूज्यवर्या-प्रवर्तनी

श्रीश्री १०८ श्रीमती देवश्रीजी महाराज साहिबा

स्वर्गवास संवत् २०१० भादवा वदि १३



जन्म संवत् १९२५ चैत्र शु० फलोदी

दिक्षा संवत् १९५० फा० शु० २ फलोदी-प्रवर्तिनी पद संवत् १९९७
मा० कृ० १३ फलोदी

ॐ

श्री देव स्मरण नित्य माला

(माङ्गलिक स्तोत्राणि.)

सप्त स्मरण.

प्रथमं श्रीबृहदजितशान्तिस्मरण.

अजिअं जिअ-सव्व-भयं । संतिं च पसंत-सव्व-गय-पावं ॥ जय-गुरु-संति-गुणकरे । दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा ववगय-मंगुल-भावे । ते हं विउल-तव-निम्मल-सहावे ॥ निरु-वम-मह-प्पभावे । थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे ॥२॥ (गाहा) सव्व-दुक्ख-प्पसंतीणं सव्य-पाव-प्पसं-तिणं ॥ सया अजिय-संतीणं । नमो अजिअ-संतीणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो) अजिय ! जिण ! सुहप्पवत्तणं तव पुरिसुत्तम ! नाम-कित्तणं ॥ तह य धिइमइ-

संति थुणामि जिणं । संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ (रासानंदियं) इक्खाग-विदेह-नरीसर ! नर-वसहा मुणि-वसहा !, नव-सारय-ससि-सकलाणण ! विगय तमा ! विहुअ-रया ! । अजिउत्तम-तेअ गुणेहिं महा--मुणिअमिय--बला ! विउल--कुला !, पणमामि ते भव--भय--मूरण ! जग--सरणा ! मम सरणं ॥ १३ ॥ (चित्तलेहा) देव--दाणविंद'चंद--सूर--वंद ! हट्ठ--तुट्ठ--जिट्ठ--परम, लट्ठ--रूव ! धंत--रुप्प--पट्ट--सेअ--सुद्ध--निद्ध--धवल दंत--पंति ! संति ! सत्ति-कित्ति--मुत्ति--जुत्ति--गुत्ति-पवर ! दित्त--तेअ वंद-धेअ ! सव्वलोअ--भावि अप्पभाव--णेय ! पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ (नारायओ) विमल-ससि-कलाइरेअ-सोमं । वितिमिर-सूर कराइरेअ-- तेअं ॥ तियसवइ-गणाइरेअ रूवं । धरणिधरपवराइरेअ-सारं ॥ १५ ॥ (कुसुमलया) सत्ते अ सया अजिअं । सारीरे अ बले अजिअं ॥ तव-संजमे अ अजिअं । एस थुणामि जिणं अ--जिअं ॥ १६ ॥ (भुअगपरिरंगियं) सोमगुणेहिं

पावइ न तं नव-सरय-ससी ! तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस-गण-वई, सार-गुणेहिं पावइ न तं धरणि-धर-वई ॥ १७ ॥ (खिज्जिअयं) तित्थ-वर-पवत्तयं तम-रय-रहिअं । धीर-जण-थुअच्चिअं चुअकलि-कलुसं ॥ संति-सुह-प्पवत्तयं ति-गरण-पयओ । संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअयं) विणओणय-सिरि-रइअंजलि-रिसिगण-संथुअं थिमिअं । विबुहाहिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महिअच्चियं बहुसो ॥ अइरुग्गय-सरय-दिवायर-समहिअ-सप्पभं तवसा । गयणंगणविअरण-समुइय-चारण-वंदिअं-सिरसा ॥ १६ ॥ (किसलयमाला) असुर-गरुल-परिवंदिअं । किन्नरोरगणमंसिअं ॥ देव-कोडि-सय-संथुअं । समण-संघ-परिवंदिअं ॥ २० ॥ (सुमुहं) अभयं अणहं । अरयं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं । पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्जुविलसिअं) आगया वरविमाण-दिव्व-कणग-रह-

तुरय-पहकर सएहिं हुलिश्रं ॥ ससंभमोअरण-खु-सिअ-लुलिअ-चल-कुण्डलंगयतिरीड-सोहंत-मउ-लि-माला ॥ २२ ॥ (वेड्ढओ) जं सुर-संघा सा-सुर संघा वेर विउत्ता, भत्ति सुजुता। आयर भु-सिअसंभम पिंडिअ सुट्ठु सुविम्हिय सव्व बलो-घा ॥ उत्तम कचण रयण परुविअ भासुर भूसण-भासुरिअंगा । गाय समोणय भत्तिवसागय पंज-लि पेसिअ सीस पणामा ॥ २३ ॥ (रयणमाला) वंदिऊण थोऊण तो जिणं । तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं ॥ पणमि ऊण य जिणं सुरासुरा । पमु-इआ स भवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ (खित्तियं) तं महामुणिमहंपि पंजली । राग दोष भय मोह वज्जिअं ॥ देव दाणवनरिंद वंदिअं । संति मुत्तम-महातवं नमे ॥ २५ ॥ (खित्तियं) अंबरंतर वियारणिआहिं । ललिअ हंस बहू गामिणिआहिं ॥ पीण-सोणि थण सालिणिआहिं । सकल कमल दल-लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ (दीवयं) पीण निरंतर-

थगा भर विणमिश्र गाय लयाहिं । मणि कंचण-पसि ढिल मेहल सोहिश्र सोणि तडाहिं ॥ वर-खिंखिणि नेउर सतिलय वलय विभूसणियाहिं । रइकर चउर मणोहर सुन्दर दसणिश्राहिं ॥ २७ ॥ (घित्तखरा) देव सुंदरीहिं पाय वंदश्राहिं, वंदिश्रा-य जस्स ते सुविक्कमा कमा । अप्पणो निडालएहिं, मंडणोड्डण पगा एहिं ॥ केहिं केहिं वि अवंग ति-लय पत्त लेह नामएहिं, चिल्लएहिं संगयं गयाहिं । भत्ति सन्निविट्ठ वंदणा गयाहिं, हुँति ते वंदिश्रा पुणो पुणो ॥ २८ ॥ (नारायश्रो) तमहं जिणचंदं । अजिश्रं जिश्र मोहं ॥ धुश्र सव्व किलेस । पयश्रो पणमामि ॥ २९ ॥ (नंदिश्रयं) थुश्र वंदिश्रस्सा रिसि गण देव गणेहिं । तो देव बहूहिं पयश्रो पण-मामिश्रस्सा ॥ जस्स जगुत्तम सासणश्रस्सा । भत्ति वसागय पिन्डिश्रश्राहिं ॥ देव वरच्छरसा बहुश्राहिं । सुर वर रइ गुण पंडिश्रश्राहिं ॥ ३० ॥ (भासुरयं) वंस सद्द तंति ताल मेलिए । तिउ क्खराभिराम सद्द—

सीसए कए अ । सुइ समाणणो अ सुद्ध सज्ज गी-
अ पाय जाल घंटिआहिं । वलय मेहला कलाव--
नेउरा भिराम सद्द सीसए कए य, देव नट्टिआहिं,
हाव भाव विब्भमप्पगारएहिं, नच्चिऊण अंग हार-
एहिं, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं ति-
लोय सव्व सत्त संति कारयं, पसंत सव्व पाव--
दोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ २१ ॥
(नारायओ) छत्त चामर पडाग जूअ जव मंडि--
आ । झय वर मगर तुरय सिरिवच्छ सुलंछणा ॥
दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिआ । सत्थियव-
सह-सीह-रह-चक्क-वरंकिया ॥ २२ ॥ (ललिअयं)
सहावलट्ठा समप्पइट्ठा । अदोस दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा
॥ पसाय सिट्ठा तवेण पुट्ठा । सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं
जुट्ठा ॥ २३ ॥ (वाणवासिआ) ते तवेण धुअ--
सव्व पावया । सव्व लोअ हिअ मूल पावया ॥
संथुआ अजिय संति पायया । हुंतु मे सिवसुहाण
दायया ॥ २४ ॥ (अपरान्तिका) एवं तव बल--

विउलं, थुअं मए अजिए संति जिणजुयलं । ववगय कम्म रयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ गाहा । तं बहुगुणप्पसायं मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अप्पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा । तं मोएउ अ नंदि, पावेउ अ नंदिसेण मभिनंदिं । परिसावि अ सुहनंदिं मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासेअ, संवच्छरिए* अवस्स भणिअव्वो । सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालं पि अजिअ संतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना वि नासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम पयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडां भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥

---

* संवच्छराइए अ दिअहे अ, इति पाठान्तरम् ।

२ लघु अजितशांति स्मरणम् ॥

उल्लासिक्कम नक्ख निग्गयपहा दंडच्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंत इव्व पयडं निव्वाण मग्गावलिं । कुंदिदुज्जल दंतकंति मिसओ नीहंत नाणंकुरु-केरे दोवि दुइज्ज सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जो मिणिज्जंजलीहिं, खय समय समीरं जो जिणिज्जा गईए । सयल नहयलं वा लंवए जो पएहिं, अजिय महव संति सो समत्थो थुणेउं ॥ २ ॥ तह वि हु वहुमाणुल्लास भत्तिब्भरेण, गुणकणमवि कित्तीहामि चिंतामणि व्व । अलमहव अचिंताणंत सामत्थओ सिं, फलिहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सयल जय हिआणं नाममित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठा निट्ठ दोघट्टथट्टं । नमिर सुर किरीडुग्घिट्ठ पायरविंदे, सयय मजिअ संती ते जिणिंदेऽभिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वड्ढए देहदित्ती विलसइ भुवि मित्ती जाइए सुप्पवित्ती । फुरई परमतित्ती होइ संसारछित्ती, जिणजुअ पयभत्ती ही अचिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललिअ पय पयारं भूरिदिव्वंग हारं, फुड घण रसभावो दार सिंगार सारं अणि

मिस रमणीजहंसणच्छेत्र भीया, इव पणमण मंदा कासि नट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसंती ते कया सेस संति कवय रय पिसंगा छज्जए जाणमुत्ती । सर भस परिरंभा रंभि निव्वाण लच्छी, घण थण घुसिणंकुप्पंक पिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविह नयभंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं, सदसदणभिलप्पा लप्पमेगं अणेगं । इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसिं, वयण मवयणिज्जं ते जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तियलोए ताव मोहंधयारं, भमइ जय मसन्नं ताव मिच्छत्तछन्नं । फुरइ फुड फलंताणंत णाणांसुपूरो, पयड मजियसंती झाण सूरो न जाव ॥ ९ ॥ अरि करि हरि तिण्हूण्हंबु चोराहि वाही, समर डमर मारी रुद्द खुद्दोवसग्गा । पलय मजिअ संती कित्तणे झत्ति जंती, निविड तर तमोहा भक्खरा लुंखिअव्व ॥ १० ॥ निचिअ दुरिअ दारू दित्त झाणग्गि जाला, परिणयमिव गोरं चिंतिअं जाण रूवं । कणय निहस रेहा कंति चोरं करिज्जा, चिर थिर मिह लच्छिं गाढ संथंभि अव्व ॥ ११ ॥ अडवि निवडियाणं पत्थिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति ट्ठियाणं । जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं जणयइ लहु संतिनाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिक्किण्णं पक्क

पाइक्क पुरग्गं, सयल पुहवि रज्जं छड्डिअंआणसज्जं । तणमिव पडि लग्गं जे जिणा मुत्तिमग्गं, चरण मणुपवन्ना हुंतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण ससि वयणाहिं फुल्ल नित्तुप्पलाहिं, थण भर नमिरीहिं मुट्ठि गिज्भोदरीहिं । ललिअ भुअ लयाहिं पीण सोणित्थलीहिं, सय सुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥१४॥ अरिसकिडिभ कुट्ठ गंठि कासाइसर, खय जर वण लूआ सास सोसोदराणि । नह मुह दसणच्छी कुच्छि कण्णाइरोगे, मइ जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरुदुह तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुग थुंत वच्छरे वा पवित्तं । पढह सुणह सिज्भाएह भाएह चित्ते, कुणह भुणह विग्घं जेण थाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तु पुत्त सिरि अजिय जिणेसर, तह अइराविसेसेण तणय पंचम चक्कीसर । तित्थंकर सोलसम संति 'जिणवल्लह' संथुअ कुरु मंगल मम हरसु दुरिय मखिलंपि थुणंतह ॥ १७ ॥

३ नमिऊणनामकं स्मरणम् ।

नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअं मुणिणो। चलण जुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नह मुह, निवुड्ड नासा विवन्न लावण्णा। कुट्ठ महारोगानलफुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेअ वुड्डियच्छया। वणदव दड्ढा गिरिपाय-वव्व पत्ता पुणो लच्छि ॥ ३ ॥ दुव्वाय खुभिय जल-निहि, उब्भड कल्लोल भीसणारावे। संभंत भय विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिय जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं। पासजिण चलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥५॥ खर पवणुध्धुय वणदव, जालावलि मिलिय सयल दुम गहणे। डज्झंत मुद्धमियवहु, भीसणरव भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविय सयल तिहुअणाभोअं। जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण नयणतरल जीहालं। उग्ग भुअंगं नवजलय, सत्थहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीडसरिस, दूर परिच्छूढ विसम विसवेगा। तुह नामक्खर फुडसिद्ध, मंत

गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर पुलिंद सद्दूल सद्दभीमासु । भय विहुरवुन्न कायर, उल्लूरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्त विहव सारा, तुह नाह ! पणाममत्त वावारा ववयगा विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआ नल नयणं, दूर विआरिअ मुहं महाकाय । नह कुलिस घाय विअलिअ, गइंद कुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभम पत्थिव, नहमणि माणिक्क पडिअ पडिमस्स । तुह वयण पहरण धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंत मुसलं, दीह करुल्लाल वुड्ढिउच्छाहं । महुपिंग नयण जुअल, ससलिल नवजलहरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति । जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख खग्गा, भिघाय पविद्ध उध्धुय कवंधे । कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्क सिक्कारपउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुध्धुर रिउ, नरिंद निवहा भडा जसं धवलं । पावंति पाव पसमिण पासजिण ! तुहप्पभावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारिमइंद गय रण भयाइं । पास जिण नामसंकी-त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥

एवं महा भयहरं, पास जिणिंदस्स संथव मुआरं । भविय जणाणंदयरं, कल्लाणपरंपर निहाणं ॥ १६ ॥ राय भय जक्ख-रक्खस, कुसुमिणि दुस्सउण रिक्खपीडासु। संझासु दोसु पंथे उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढई जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स। पासो पांव पसमेउ, सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥



४ गणधरदेवस्तुतिनामकं स्मरणम् ।

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्मं पवित्तियं भव्व सत्त संताण सुह जणयं ॥ १ ॥ नासियमयल किलेसा, निहय कुलेसा पसत्थसुहलेसा । सिरि वद्धमाण तित्थस्स, मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्मबीआ, बीआ परमे-ट्ठिणो गुणसमिद्धा । सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता । आयरिआ तह तित्थं, निहय कुतित्थं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वायगा, वायगा य सिअवाय वायगा वाए । पवयण पडिणीय

कए, वणितु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण साहणुज्जुय, साहुणं जणिअ साहज्जा। तित्थप्पभावगा ते, हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं णाणं, निव्वाण फलं च चरण मवि हवई। तित्थस्स दंसणं तं, मंगल मवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छम्मो सुयधम्मो, समग्ग भव्वंगि वग्ग कयसम्मो। गुणसुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ भव्व सत्त सिवसम्मो। निसेसकिलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, सिवसुह मइणो कुणंतु तित्थस्स। सिरि वद्धमाण पहुपय-डिस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जिय पडिवक्खा जक्खा, गोमुह मायंग गयमुह पमुक्खा। सिरि बंभस त सहिआ, कय नयरक्खा सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहय डिंबा, सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स। चक्केसरि वईरुट्टा, संतिसुरा दिसउ सुक्खाणि ॥१२॥ सोलस विज्जा देवीओ, दितु संघस्स मंगलं विउलं। अच्छुता सहिआओ विस्सुअ सुयदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कयरक्खा, जक्खा चउव्वीस सासणसुरा वि। सुहभावा संतावं तित्थस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जिणपवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे। वेयावच्च करा वि अ, तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुद्ध समग्ग, विहिय भव्वाण

जणिय साहज्जो । गीयरई गीअजसो, सपरिवारो सिवं दिसउ ॥ १६ ॥ गिह गुत्त खित्त जलथल, वण पव्वय वासि देव देविओ । जिण सासण ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दस दिसिवाला सखित्त-वालया नवग्गहा सनक्खत्ता । जोइणिराउग्गह काल-पास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥ १८ ॥ सह काल-कंटएहिं सविठ्ठि वच्छेहिं कालवेलाहिं । सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइ वाणमंतर, जोइस वेमाणिआ य जे देवा । धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु दुरिआइं तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणासिय तमोहं । तं तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सऽज्जवि सासणं जए जयइ । सिद्धिपह-सासणं कुपह, नासणं सव्वभय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसभसेण पमुहा, हयभय निवहा दिसंतु तित्थस्स । सव्व जणाणं गुणहा रिणोऽणहं वंछियं सव्वं ॥ २३ ॥ सिरि वद्धमाण तित्था हिवेण तित्थं समाप्पियं जस्स । सम्मं सुहम्मसामि, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ २४ ॥ पयइए भद्दियाजे, भद्दाणि दिसंतु सयल संघस्स । इयरसुरावि हु सम्मं जिण गणहर कहिय कारिस ॥२५॥

इय जो पढइ तिसंझं तस्स नत्थि किंपि जए। जिणदत्ताणाए ठिओ, निट्ठिअट्ठो सुही होई ॥ २६ ॥



५ गुरुपारतंत्र्यनामकं स्मरणम् ।

मयरहियं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं। सुगुरुजण पारतंत उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निहय विरोहा पणट्ठ संदेहा। पणयंगि वग्ग दाविअ, सुह संदेहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसुजइत्त सोहा, समत्त परतित्थ जणिअ सखोहा। पडिभग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्थ सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्थवाहा, हय दुहदाहा सिवं बतरुसाहा। संपाविअ सुहलाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरवज्ज गहिअ पव्वज्जा। सिवसुह साहण सज्जा, भवगुरु गिरि चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्ज सुहम्म पमुहा, गुणगण निवहा सुरिंद विहिअ महा। ताण तिसंझं नाम, नामं न पणासइ जियाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिय जिणदेवो, देवायरिओ दुरत भवहरि। सिरि

नेमिचंद सूरी, उज्जोअण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरिवद्धमण सूरी, पयडीकय सूरिमंत माहप्पो । पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुह जणओ ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्परण, पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि । जुगपवर सुद्ध सिद्धंत, जाणओ पणय सुगुण जणओ ॥ ९ ॥ पुरओ दुल्लह महि व ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्का विआरिऊणं, सीहेण व दव्वलिंगि गया ॥ १० ॥ दसमच्छेरय निसिवि-प्फुरंत सच्छंद सूरिमय तिमिरं । सूरेणव सूरिजिणेसरेण हयमहिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्त कित्ती, पयाडअ गुत्ती पसंत सुहमुत्ती । पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद जईसरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ नवंगसुत्तत्थ रयणकोसो पणासिअ पओसो । भव भविअ जणमण, कायसंतोसो विगयदोसो ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, परूवणा करण बंधुरो धणिअं । सिरि अभयदेव सूरी, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सावय संतासो, हरिव्व सारंग भग्ग संदेहो । गय समय दप्प दलणो, आसाइअ पवर कव्वरसो ॥ १५ ॥ भीम भव काणणंमि अ दंसिअ गुरुवयण रयण संदेहो । निसेस सत्त गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअ सच्चरणो चउरणुओगप्पहाण सच्चरणो । असम मयराय महणो, उड्ढमुहो

सहई जस्स करो ॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल दंतगणो गणिय सावओत्थ भओ । गुरु गिरि गरुओ सरहुव्व, सूरि जिणवल्लहो होत्था ॥ १८ ॥ जुग पवरागम पीऊम–पाण पीणिय मणा कया भव्वा । जेण जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिय पवर पवयण, सिरोमणी वूढदुव्वह खमोय जो सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताणकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरूणं पारतंत मुव्वहइ । जयइ जिणदत्तसूरी, सिरि निलओ पणयमुणिपिलओ ॥ २१ ॥

६ सिग्घमवहरउ नामकं स्मरणम् ।

सिग्घ मवहरउ विग्घं, जिण वीराणाणुगामि संघस्स । सिरि पासजिणो थंभण, पुरट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठा ॥ १ ॥ गोयम सुहम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ भव्व सत्तसुहा । सिरि वद्धमाण जिण तित्थ, सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्का इणो सुरा जे, जिण वेयावच्च कारिणो संति । अवहरिय विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संतिकरा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणय ट्ठियपास, सामि पयपउम पणय पाणीणं । निद्दलिय दुरिय विंदो, धरणिंदो हरउ दुरिआइं ॥४॥ गोमुह पमुक्ख जक्खा, पडिहय पडिवक्ख पक्ख लक्खा ते । कय सुगुण संघ रक्खा, हवंतु संपत्त सव सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का

पमुहा, जिणमासण देवयाउ जिणपणया । सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसा सच्चउर-पुरट्ठिओ वद्धमाण जिणभत्तो । सिरि बमसंति जक्खो, रक्खउ सवं पयत्तेणं ॥७॥ खित गिह गुत्त संताण, देस देवाहि देवया ताओ । निव्वुइपुर पहिआणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरी चक्कधरा, विहिपह रिउछिन्न कंधरा धणियं । सिवसराण लग्ग संघस्स, सव्वाह हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइ वद्धमाणो, जिणेसरो संगओ सु घेण । जिणचंदो-ऽभयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहु मं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो णेसरुव्व हयतिमिरो । जिणचंदाभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए-ऽभयदेव पहुत्तदायगे वंदे । जिणचंद जिणेसर-वद्धमाण तित्थस्स बुड्ढिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नति कुणति जे य कारंति । मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्त गुणे नाणा-इणो सया जे धरंतिधारिंति । दंसिअ सिअवाय पए नमामि साहम्मिआ तेवि ॥१४॥

७ उवसग्गहरं नामकं स्मरणम् ।

उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं । विसहर विस निन्नासं मंगल कल्लाण आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग

मंतं, कंठे धारेइ जो मया मणुओ । तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ! ॥ ५ ॥

॥ इति सप्त स्मरणानि ॥

ऋषिमंडलस्तोत्रम् ।

आद्यंताक्षरसंलक्ष्य-मक्षरं व्याप्य यत स्थितं । अग्निज्वाला समं नाद-बिंदुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं मनोमलविशोधकं । देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरे ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्यः, ॐ सिद्धेभ्यो नमो नमः ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नमः । ॐ नमस्तत्वदृष्टिभ्य-श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नम ॥ ५ ॥ श्रेयसे स्तु

भियस्त्वेत–दर्हदाधष्टके शुभं स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग्बीज-समन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां रत्तेत्, परं रत्तेतु मस्तकं । तृतीयं रत्तेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रत्तेच्च नासिकां ॥ ७ ॥ पंचमं तु मुखं रत्तेत्, षष्टं रत्तेच्च घंटिकां । नाभ्यंतं सप्तमं रत्तेद्, रत्तेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः, सरेफो द्वयब्धिपंचषान् । सप्ताष्ट-दशसूर्यांकान्, श्रितो बिंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनाम त्तरा आद्याः, पंचैते ज्ञानदर्शने । चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं सांतः समलंकृतः ॥१०॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः, असिआउसा सम्यग् ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो ह्री नमः । जम्बूवृक्षधरो द्वीपः, त्तारोदधिसमावृतः । अर्हदाद्यष्टकैरष्ट काष्ठाधिष्ठैरलंकृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्ये संगतो मेरुः, कूटलत्तैरलकृतः उच्चैरुच्चैस्तरस्तारस्तारा-मंडलमंडितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजमध्यास्य सर्वगं । नमामि बिंबमार्हन्त्य, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अत्तयं निर्मलं शांतं, बहुलं जाड्यतोज्झितं । निरीहं निरहंकारं, सारं सारतरं घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं, सात्विकं राजसं मतं । तामसं चिरसंवुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं सरसं विरसं परं । परापरं परातीतं, परंपर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं । पंचवर्णं महा-

वर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं । निरंजनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं बुद्धं सिद्धं मतं गुरुं । ज्योतीरूपं महादेवं, लोकालोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णांतः, सरेफो बिंदुमंडितः । तुर्यस्वर सामायुक्तो, बहुधा नादामालितः ॥ २० । अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्या जिनोत्तमाः । वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो, बिंदुर्नीलसमप्रभः । कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः सर्वतोमुखः ॥२२ । शिरःसंलीन ईकारो, विनीलो वर्णतः स्मृतः । वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थंमृत्मंडलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभ पुष्पदंतौ, नादस्थिति समाश्रितौ । बिंदुमध्यगतौ नेमि-सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ । पद्मप्रभवासु-पूज्यौ, कलापद मधिष्टितौ । शिरईस्थिति-संलीनौ, पार्श्व मल्ली जिनेश्वरौ ॥ २५ । शेपास्तीर्थंकृतः सर्वे, हरस्थाने नियोजिताः । मायाबीजाक्षरं प्राप्ता-श्चतुर्विंशति-र्र्हतां ॥ २६ ॥ गतरागद्वेपमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः । सर्वदा सर्वकालेषु, ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चकस्य या विभा । तया च्छादितसर्वांगं मा मां हिनस्तु डाकिनी । २८ ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामां हिनस्तु

लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु काकिनी ॥ ३१ ॥ देवदे० मा मां हिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० । मा मां हिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देवदे० । मा मां हिनस्तु याकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु पन्नागाः ॥ ३५ ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु हास्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु राक्षसाः ॥ ३७ ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु वह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु सिंहका ॥ ३९ ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु दुर्ज्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे० । मा मां हिंसंतु भूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुवि लब्धयः । ताभि रभ्युद्यत ज्योति-रहं सर्व निधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पाताल वासिनो देवा, देवा भपीठवासिनः । स्वर्गासिनोऽपि ये देवाः, सर्वे रक्षंतु मामितः ॥४३॥ येऽवधि लब्धयो ये तु, परमावधि लब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवा, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥४४॥ दुर्जना भूतवेतालः, पिशाचा मुद्गलास्तथा । तेसर्वेऽप्युप शाम्यंतु, देवदेव प्रभावतः ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्र श्च धृतिर्लक्ष्मी—गौरी चडी सरस्वती । जयांबा विजया नित्या, क्लिन्ना जिता मदद्रवा ॥४६॥ कामांगा कामवाणा च, सानंदा नंदमालिनी । माया मायाविनी रौद्री, कला

काली कलिप्रिया ॥४७॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्तन्ते या जगत्त्रये । मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥४८॥ दिव्यो गोप्यः सुदुष्प्राप्यः, श्रीऋषिमंडलस्तवः । भाषितस्तीर्थनाथेन, जगत्त्राणकृतेऽनघः ॥४९॥ रणे राजकुले वह्नौ, जले दुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टा निजं पदं । लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतं । वित्तार्थी लभते वित्तं, नरः, स्मरण मात्रतः ॥५२॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यैवाष्टमहासिद्धि गृहे वसति शाश्वती ॥५३॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्नि वा भुजे । धारितं सर्वदा दिव्य, सर्वभीतिविनाशकं ॥५४॥ भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः । वातपित्तकफोद्रेकै- र्मुच्यते नात्र संशयः ॥५५॥ भूर्भुवःस्वस्त्रयीपीठ–वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टै र्यत् फलं तत्फलं श्रुतौ ॥५६॥ एतद् गोप्यं महास्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचिद् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादि तपः कृत्वा, पूज- यित्वा जिनावलिं । अष्टसाहस्त्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात–र्ये पठंति

दिने दिने। तेषां न व्याधयो देहे, प्रभवंति न चापदः ॥ ५६ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतन्महा-तेजो, जिनबिम्बं सपश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिंबे, भवे सप्तमके ध्रुवं । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानंदनंदित ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गत्वा स्थानं पर सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुत्त मं परं । पठनात्स्मरणज्जापा-ल्लभ्यतेप-दमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इति श्रीऋषिमंडलस्तोत्रं ।

श्रीभक्तामर-स्तोत्रम् ।

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा-मुद्यो-तकं दलित-पाप-तमो-वितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा-वालम्बनं भव-जले पततां जन नाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्वबोधा-दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैः । स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ (युग्मम्) बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पाद-

पीठ ! स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम् ॥ बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दुबिम्ब-मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ? ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र ! शशाङ्क-कान्तान् । कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्धया ? ॥ कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्र । को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ? ॥४॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश ! कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्म-वीर्य्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं । नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम् ? ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परि-हास-धाम । त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ॥ यत् कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति । तच्चारु-चूत-कलिकानिकरैक--हेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भव--संतति--सन्निबद्धं । पाप क्षणात् क्षय-मुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रान्तलोकमलि--नीलमशेषमाशु । सूर्यांशु--भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद--मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनी--दलेषु । मुक्ताफल--द्युतिमुपैति ननूद--बिन्दुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्त--समस्त--दोषं । त्वत्संक-थापि जगतां दुरितानि हन्ति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव ।

पद्माकरेषु ! जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन-
भूषण ! भूतनाथ ! भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ॥ तुल्या
भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा । भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं
करोति ? ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं । नान्यत्र
तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशि--कर--द्युति -
दुग्ध--सिन्धोः । क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ? ॥ ११ ॥
यैः शान्तराग--रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं । निर्मापितस्त्रिभुवनैक--
ललाम--भूत ! ॥ तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां । यत्ते
समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क ते सुर--नरोरग--
नेत्र--हारि । निःशेषनिर्जितजगत्--त्रितयोपमानम् ॥ बिम्बं कलङ्क-
मलिनं क्व निशाकरस्य । यद् वासरे भवति पाण्डु--पलाश--
कल्पम् ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण--मण्डल--शशाङ्क--कला--कलाप--शुभ्रा
गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति ॥ ये संश्रितास्त्रि--जगदीश्वर--नाथ-
मेकं । कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ? ॥ १४ ॥ चित्रं
किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि--र्नीतं मनागपि मनो न विकार-
मार्गम् ॥ कल्पान्त--काल--मरुता चलिताचलेन । किं मन्दराद्रि--
शिखरं चलितं कदाचित् ? ॥ १५ ॥ निर्धूमवर्त्तिरपवर्जित--

तैलपूरः । कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां । दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः । स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ॥ नाम्भोधरोदर–निरुद्ध–महा--प्रभावः । सूर्यातिशायि--महिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलित--मोह–महान्धकारं । गम्यं न राहु–वदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प--कान्ति । विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्क-बिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा । युष्मन्मुखेन्दु–दलितेषु तमस्सु नाथ ! ॥ निष्पन्न--शालि--वन-शालिनि जीव–लोके । कार्यं कियज्जलधरैर्जल--भार नम्रैः ? ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाश । नैव तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं । नैवं तु काच–शकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरा-दय एव दृष्टा । दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः । कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान् । नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र–

रश्मि । प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामा-
मनन्ति मुनयः परमं पुमांस--मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं । नान्यः शिवः शिव--पदस्य
मुनीन्द्र ! पन्थः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसं-
ख्यमाद्यं । ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदित-
योगमनेकमेकं । ज्ञान--स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित--बुद्धिबोधात् । त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय--
शंकरत्वात् ॥ धाताऽसि धीर ! शिव--मार्ग--विधेर्विधानाद् ।
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुव-
नार्त्तिहराय नाथ ! तुभ्यं नमः क्षिति--तलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं
नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय । तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि--शोष-
णाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै--स्त्वं
संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! दोषै--रुपात--विविधाश्रय--जात-
गर्वैः । स्वप्नान्तरेपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैर-
शोक--तरु--संश्रितमुन्मयूख--माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ॥
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्त--तमो--वितानं । बिम्बं रवेरिव पयोधर
पार्श्व--वर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणि--मयूख--शिखा--विचित्रे

विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिम्बं वियद्विलसदंशुलता--वितानं। तुङ्गोदयाद्रि शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुन्दावदात चलचमार -चारु- शोभं। विभ्राजते तव वपुः कलधौत--कान्तम् ॥ उद्यच्छशाङ्क--शुचि--निर्झर--वारिधार--मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शात कौम्भम् ॥ ३० ॥ छत्र--त्रयं तव विभाति शशाङ्क--कान्तमुच्चैः स्थितं स्थगित--भानु--कर--प्रतापम् ॥ मुक्ताफल--प्रकरजाल--विवृद्ध शोभं। प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ । उन्निद्र--हेम--नव--पङ्कज पुञ्ज--कान्ति--पर्युल्लसन्नखमयूख। पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः। पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र! धर्मोपदेशन--विधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा। तादृक् कुतो ग्रह--गणस्य विकासिनो ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदा-विलविलोल--कपोल--मूल--मत्त--भ्रमर--नाद--विवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्ध तमापतन्तं। दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रि-तानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभ--कुम्भगलदुज्ज्वल--शोणिताक्त। मुक्ता-फल--प्रकर--भूषितभूमि--भागः ॥ बद्ध--क्रमः क्रम--गतं हरिणा-धिपोऽपि। नाक्रामति क्रम--युगाचल--संश्रित ते ॥ ३५ ॥

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं । दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं । त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं । क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् ॥ आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त-शङ्क-स्त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्ग-तुरङ्ग-गज-गर्जित-भीमनाद-माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥ उद्यद्दिवाकर-मयूखशिखापविद्धं । त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुन्ताग्र-भिन्न गज-शोणितवारिवाह-वेगावतार- तरणातुर-योधभीमे ॥ युद्धे जयं विजित-दुर्जय जेय-पक्षा-स्त्वत्पादपङ्कज-वनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण-नक्र-चक्र-पाठीन-पीठ-भयदोल्वण-वाडवाग्नौ ॥ रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यान-पात्रा—स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूत-भीषणजलोदर-भारभुग्नाः । शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीवि-ताशाः ॥ त्वत्पादपङ्कज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा । मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्य-रूपाः ॥ ४१ ॥ आपाद कण्ठमुरु शृङ्खल-वेष्टि-ताङ्गा । गाढं बृहन्निगडकोटि-निघृष्टजङ्घाः ॥ त्वन्नाममन्त्र-

मनिशं मनुजाः स्मरन्तः । सद्यः स्वयं विगत--बन्ध--भया भवन्ति ॥ ४२ ॥--मत्त--द्विपेन्द्र--मृगराज--दवानलाहि--संग्रामवारिधि--महोदर--बन्धनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव । यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां । भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं । तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

श्री कल्याणमन्दिरस्तोत्रम्ः

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि । भीताभयप्रदमनिंदितमंघ्रि-पद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु--पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः । स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो--स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ (युग्मम्) सामान्य-तोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप--मस्मादृशाः कथमधीश ! भवन्त्य-धीशाः ? धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो । रूपं प्ररूप-यति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ !

मर्त्यो । नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पान्तवान्त-
पयसः प्रकटोऽपि यस्मा--न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ? ॥४॥
अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडाशयोऽपि । कर्तुं स्तवं लसदस-
ङ्ख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य ।
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाऽम्बुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न
यान्ति गुणास्तवेश ! वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ॥ जाता
तदेवमसमीक्षितकारितेयं जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि
॥ ६ ॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन ! संस्तवस्ते । नामापि पाति
भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे । प्रीणाति
पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो
शिथिलीभवन्ति । जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो
भुजङ्गमया इव मध्यभाग--मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य
॥ ८ ॥ मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र ! रौद्रैरुपद्रवश-
तैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे ।
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारको जिन !
कथं भविनां त एव ? त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः ॥ यद्वा
दतिस्तरति यज्जलमेष नून--मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः

॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रभृतयोऽपि हतप्रभावाः । सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतभुजः पयसाऽथ येन । पीतं न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना--स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन ?। चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो । ध्वस्तास्तदा वत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिराऽपि लोके । नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ? ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप—मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुजकोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्यदि वा किमन्य—दक्षस्य सम्भवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन । देहं विहाय परमात्मदशां व्रजन्ति ॥ तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके । चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥१५॥ अन्तः सदैव जिन ! यस्य विभाव्यसे त्वं । भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनो हि । यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या । ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ॥ पानीयमप्यमृ-

तमित्यनुचिन्त्यमानं । किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ? ॥१७॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि । नूनं विभो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि शङ्खो । नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि । किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृन्तमेव । विष्वक् पतत्य-विरला सुरपुष्पवृष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश । गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥ २० ॥ स्थाने गभीरहृदयोदधिसम्भवायाः । पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति ॥ पीत्वा यतः परमसम्मदसङ्गभाजो । भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् ! सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो । मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुङ्गवाय । ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न । सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वाम् ॥ आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-श्चामिकराद्रिशिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥ २२ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन । लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव । सान्निध्यतोऽपि

यदि वा तव वीतराग ! नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥ भो भोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन–मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव ! जगत्त्रयाय । मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ ! तारान्वितो विधुरयं विहिताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन । कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन । सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजो जिन ! नमत्–त्रिदशाधिपाना–मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् ॥ पदौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र । त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि । यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव । चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२६॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक ! दुर्ग–तस्त्वं । किंवाक्षर प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव । ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषा–दुत्थापितानी कमठेन शठेन यानि ॥ छायाऽपि तैस्तव न

नाथ हतः हताशो । ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥

यद्गर्जदूर्जितघनौघ–मदभ्रभीमं । भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोर–धारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे । तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्त्यमुण्ड–प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः । सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य–माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः । पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश ! मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्र–मन्त्रे किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव ! मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश ! पराभवानां । जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन । पूर्वं विभो ! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः । प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥३७॥ १ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि । नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥

जातोऽस्मि तेन जनबान्धव दुःखपात्रं । यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल ! हे शरण्य ! कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ! ॥ भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय । दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्य-सारशरणं शरणं शरण्यमासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो । वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन ! हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य विदिताखिलवस्तुसार ! । संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! ॥ त्रायस्व देव ! करुणा-ह्रद मां पुनीहि । सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां । भक्तेः फलं किमपि सन्तति-सञ्चितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्यः भूयाः । स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र । सान्द्रोल्लसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः ॥ त्वद्बिम्ब-निर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्य । ये संस्तवं तव विभो ! रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचन्द्र—प्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया । अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते (युग्मम्) ॥४४॥



॥ अथ जिनपञ्जर स्तत्रोम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह अर्हद्भ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह सिद्धेभ्यो नमोनमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्य नमोमनः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमानमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एस पञ्च-नमस्कारः, सर्व-पापक्षयंकरः। मंगलानां च सर्वेषां प्रथमं भवति मंगलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री जये विजये, अर्हं परमात्माने नमः। कमलप्रभ-सूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम्। मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्याब्रह्मचर्य्येण, क्रोधलोभविवर्जितः। देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेद् मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके। आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च। सूर्य-चन्द्र निरोधेन, सुधीः सर्वार्थ-सिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदन-द्वेषी, वाम-पार्श्वे स्थितो जिनः। अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥८॥ पूर्वाशां श्री जिनो रक्षे,-दाग्नेयीं विजितेन्द्रिः। दक्षिणाशां परं

ग्नह्म, नैऋ तीं च त्रिकालवित् ॥ ६ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वर । उत्तरां तीर्थकृत् सर्वामीशानीं च निरञ्जनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तम । रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे- दजितोऽपि विलोचने । संभवः कर्ण-युगल. नासिकां चाभिनन्दनः ॥ १२ ॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभो विभुः । जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कण्ठं श्रीसुविधी रक्षेद्, हृदयं श्रीसुशीतलः । श्रेयांसो बाहु-युगलं, वासु- पूज्यः कर-द्वयम् ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षेद्, अनन्तोऽसौ स्तनावपि । सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशान्तिर्नाभि-मण्डलम् ॥१५॥ श्रीकुन्थुगुह्यकं रक्षे,-दरो रोम-कटी-तटम् । मल्लिरुरू पृष्ठवंशं, जङ्घे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादाङ्गुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमि- श्चरणद्वायम् । श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्धमानश्चिदात्मकम् ॥१७॥ पृथि-वीजल-तेजस्कं,-वाय्वाकाशमयं जगत् । रक्षेदशेष-पापेभ्यो, वीतरागो निरञ्जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे व्याघ्र-चोराग्नि-सर्पादि-भूत प्रेत-भया-श्रिते ॥ १९ ॥ अकाल-मरण-प्राप्ते दारिद्र्यापत्स-माश्रिते । अपुत्रत्वे महादोषे,

मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी-शाकिनी-ग्रस्ते, महा-ग्रह-गणार्दिते । नद्युत्तारेऽध्व-वैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् । तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदम् ॥ २२ ॥ जिनपञ्जरनामेदं यः स्मरत्यनुवासरम् । कमलप्रभराजेन्द्र, श्रि ''यं स लभते नरः ॥२३॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम् । आसादयेत्स कमलप्रभाख्यां,—लक्ष्मीं मनोवाञ्छित-पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीय-वरेण्य-गच्छे, देवप्रभाचार्य-पदाब्ज-हंसः । वादीन्द्र-चूडामणिरेष जैनो जीयाद् गुरुः श्रीकमल-प्रभाख्यः ॥२५॥

इति श्रीजिनपंजर-स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीमहावीराय नमः ॥

अथ लघुजिनसहस्रनाम प्रारंभः

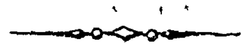
नमस्त्रिलोकनाथाय, सर्वज्ञाय महात्मने । वक्ष्ये तस्यैव नामानि, मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतः शुद्धो, निर्विकल्पो निरामयः । निःशरीरी निरातंकः, सिद्धः सूक्ष्मो

निरंजनः निष्कलंको निरालंबो, निर्मोह निर्मलोत्तमः । निर्भयो निरहंकारो, निर्विकारोऽथ निष्क्रियः ॥३॥ निर्दोषो नीरुजः शान्तो, निर्भेद्यो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो, निराकर निष्कर्मा निष्कलः प्रभु ॥ ४ ॥ निर्वादोऽनुपमज्ञानो, नीरागो निरघो जिनः । निःशब्दः प्रतिमश्लेष्ठ, उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥ निःसंगात्मा-प्रकैवल्यो, नैष्ठिकः शब्दवर्जितः । अनिंद्यो महपूतात्मा जगतशिखर शेखरः ॥ ६ ॥ निःशब्दो गुणसंपन्नः पापतापप्रणाशनः । सोऽपि योगाच्छुभं प्राप्तः, कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरश्चामरः सिद्ध, स्त्वचिंतश्चाक्षयो विभुः । अमूर्त्तस्त्वच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८ ॥ विश्वनाथस्त्वनिंद्यश्चा, अनन्तोऽनुपमो भवः । अप्रमेयो जगन्नाथो, बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययः सकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञानलोचनः । अच्छेद्यो निर्मलो नित्यः, सर्वशल्यविवर्जितः ॥ १० ॥ अजेयः सर्वतोभद्रो, निष्कषायो भवान्तकः । त्रिभवनाथः स्वयंबुद्धो, वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतकः सहजानंद, स्त्ववाङ्मनसगोचरः । असाध्यः शुद्धश्चैतन्यः कर्मण्योऽकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतो विमलज्ञानी, निस्पृहो निष्प्रकाशकः । कर्मार्जितो महात्मा च लोकत्रयशिरोमणिः ॥१३॥

देवदेवेशनायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वंसी, योगिनांज्ञान-गोचरः जन्ममृत्युजरातीतः, सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्व-दृग्भव्यसंबंधः, पवित्रो गुणसागरः । प्रसन्नः परमाराध्यो, लोका-लोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी, शक्रवंद्यः सुरा-र्चितः । निष्प्रपंचो निरातंको, निःशेषक्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो, लोकालोकविलोकिनः । लोकोत्तमस्त्रिलो-केशो, लोकाग्रशिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि ये

. पुनः । ते निर्वाणपदं यांति प्राणिनो नात्र संशयः ॥४१॥

लघुजिनसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥

त्वं, जिनः परमशङ्करः । नाथः परम-

॥ १ ॥ सर्वविघ्नहरः स्वामी सर्व-

, श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥

. शिवः । परमात्मा परब्रह्म,

: सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषो-

निरंजनः निष्कलंको निरालंबो, निर्मोह निर्मलोत्तमः। निर्भयो निरहंकारो, निर्विकारोऽथ निष्क्रियः ॥३॥ निर्दोषो नारुजः शान्तो, निर्भेद्यो निर्ममः शिवः। निस्तरंगा, निराकर निष्कर्मा निष्कलः प्रभु ॥ ४ ॥ निर्वादोऽनुपमज्ञानो, नीरागो निरवो जिनः। निःशब्दः प्रतिमश्लेष्ठ, उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥ निःसंगात्मा-प्रकैवल्यो, नैष्ठिकः शब्दवर्जितः। अनिंद्यो महपूतात्मा जगतशिखर शेखरः ॥ ६ ॥ निःशब्दो गुणसंपन्नः पापतापप्रणाशनः। सोऽपि योग चक्षुमं प्राप्तः, कर्मद्यो विवलांबदः ॥ ७ ॥ अजरश्चामरः सिद्ध, स्त्वर्चितश्चात्मयो विभुः। अमूर्त्तस्त्वच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८ ॥ विश्वनाथस्त्वनिद्यश्चा, अननोऽनुपमो भवः। अप्रमेयो जगन्नाथो, बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययः सकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञानलोचनः। अच्छेद्यो निर्मलो नित्यः, सर्वशल्यविवर्जितः ॥ १० ॥ अजेयः सर्वतोभद्रो, निष्कषायो भवान्तकः। विश्वनाथः स्वयंबुद्धो, वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतकः सहजानंद, स्त्ववाङ्मनसगोचरः। असाध्यः शुद्धश्चैतन्यः कर्मण्योऽकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंतो विमलज्ञानी, निस्पृहो निष्प्रकाशकः। कर्माजितो महात्मा च लोकत्रयशिरोमणिः ॥१३॥

अव्याबाधो वरः शंभुर्विश्ववेदी पितामहः शर्वभूतहितो देवः, सर्व-लोकशरण्यकः ॥ १४ ॥ अनान्दरूप- श्चैतन्यो, भगवांस्त्रिजगद्-गुरुः । अनंतानंतधीशक्तिः, सत्यव्यक्तोऽव्ययात्मकः ॥ १ ५ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः, सप्तधातुविवर्जितः । गौरवादित्रयाद्दूरः, सर्व-ज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अभयः प्राप्तकैवल्यो, निर्मानो निरपे-क्षकः । निष्कलः केवल ज्ञानी, मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो, वरदो ज्ञानपावकः । सर्वेशः सत्सुखावासो, जिनेंद्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनः परमज्ञानी, विश्वतत्त्व-प्रकाशकः । प्रबुद्धो भगवन्नाथः प्रस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १६ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः, सर्वज्ञोमदनांतक । ईश्वरो भुवनाधीशः, सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सद्योजातमहात्मा च विमुक्तो मुक्तिवल्लभः । योगीन्द्रोऽनादिसंसिद्धो, निरीहो ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदाशिवश्चतुर्वक्त्रः, सत्सौख्यस्त्रिपुरान्तकः । त्रिनेत्रस्त्रि-जगत्पूज्यः, कल्याणकोष्टमूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वन्द्यः सर्वपापविवर्जितः । सर्वदेवाधिको देवः सर्वभूतहितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मा च प्रसिद्धः पापनाशनः । तनुमात्रचिदानंद, श्चैतन्य श्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देवो, मुक्तिस्थो

महतांमहः । मुक्तिकार्या संतुष्टो, नीरोगः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महादेवो महावीरो, महामोहविनाशकः । महाभावो महादर्शो, महामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी, महातपो महात्मकः । महर्द्धिको महावीर्यो, महान्तिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महापूज्यो महावंद्यो, महाविघ्नविनाशकः । महासौख्यो महापुंसो, महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तो मुक्तिजसंबोध, एकोऽनेको विनिश्चलः । सर्व-बंधविनिर्मुक्तः सर्वलोकप्रधानकः ॥ २६ ॥ महाशूरो महाधीरो, महादुःखविनाशकः । महामुक्तिप्रदो धीरो, महाहृद्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविध्वंसो, निष्कामो विपच्युतः । भगवांश्च महाभ्रांतः, शांतिकल्याणकारकः ॥ ३१ ॥ परमात्मा परंज्योतिः, परमेष्ठीरमेश्वरः । परमात्मा परानन्द, परश्च परमात्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी, सौख्यनिर्वाणसंयुतः । नाकृतिरचरो वर्णो, व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्तोऽव्यक्तजसंबुद्धः, संसारच्छेदकारणः । निरवद्यो महाराध्यः, कर्मजिद्धर्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधिसत्वो जगद्वन्द्यो, विश्वात्मा नरकांतकः । स्वयंभूः पापहृत्पूज्यः, पुनीतो विमवः स्तुतः ॥३५॥ वर्णातीतो महातीतो, रूपातीतो निरंजनः । अनंतज्ञानसंपूर्णो,

देवदेवेशनायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वंसी, योगिनांज्ञान-गोचरः जन्ममृत्युजरातीतः, सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्व-दृग्भव्यसंबंधः, पवित्रो गुणसागरः । प्रसन्नः परमाराध्यो, लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी, शक्रवंद्यः सुरार्चितः । निष्प्रपंचो निरातंको, निःशेषक्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो, लोकालोकविलोकिनः । लोकोत्तमस्त्रिलोकेशो, लोकाग्रशिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि ये पठन्ति पुनः पुनः । ते निर्वाणपदं यांति प्राणिनो नात्र संशयः ॥४१॥

इति श्रीभद्रबाहुस्वामिविरचितं लघुजिनसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ श्रीमन्त्राधिराजस्तोत्रम् ॥

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशङ्करः । नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः शरणकामदः ॥ १ ॥ सर्वविघ्नहरः स्वामी सर्वसिद्धिप्रदायकः । सर्वसत्वहितो योगी, श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥ देवदेवः स्वयंसिद्ध-श्चिदानन्दमयः शिवः । परमात्मा परब्रह्म, परमः परमेश्वरः ॥ ३ ॥ जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषो-

त्तमः । सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवासः शुभार्णवः ॥ ४ ॥ सर्वज्ञः सर्वदः सर्वगोत्तमः । सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥ तत्त्वमूर्तिः परादित्यः, परब्रह्म प्रकाशकः । परमेन्दुः परप्राणः परमामृतसिद्धिदः ॥ ६ ॥ अजः सनातनः शम्भु-रीश्वरश्च सदाशिवः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुभप्रदः ॥ ७ ॥ साकारश्च निराकारः, सकलो निष्कलोऽव्ययः । निर्ममो निर्विकारश्च, निर्विकल्पो निरामयः ॥ ८ ॥ अमरश्चाजरोऽनन्त, एकोऽनन्तः शिवात्मकः । अलक्ष्यश्चैव वामेयो, ध्यानलक्ष्यो निरंजनः ॥ ६ ॥ ॐकाराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तरूपस्त्रयीमयः । ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्षरः ॥ १० ॥ दिव्यतेजोमयः शान्तः परामृतमयोऽच्युतः । आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुमान् ॥ ११ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशः, स्वयंभूः परमाच्युतः । व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावभासकः ॥ १२ ॥ ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारूढो मनः स्थितिः । मनः साध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः ॥ १३ ॥ सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभुः । भगवान् सर्वतत्त्वेशः शिवश्रीसौख्यदायकः ॥ १४ ॥ इतिश्री पार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः । दिव्यमष्टोत्तरंनाम, शतमत्र प्रकीर्तितम्

॥ १५ ॥ पवित्रं परमं ध्येयं, परमानन्द-दायकम् । भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं, पठते मंगलप्रदम् ॥ १६ ॥ श्रीमम् परमकल्याण-सिद्धिदः श्रेयसेऽस्तु वः । पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिवः ॥ १७ ॥ धरणेन्द्रफणच्छत्रालंकृतो वः श्रियं प्रभुः । दद्यात् पद्मावतीदेव्या, समधिष्ठितशासनः ॥ १८ ॥ ध्यायेत् कमलमध्यस्थं, श्रीपार्श्वं जगदीश्वरम् ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं समायुक्तं, केवलज्ञानभास्करम् ॥ १६ ॥ पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे । परितोऽष्टदलस्थेन मंत्रराजेन संयुतम् ॥ २० ॥ अष्टपत्रस्थितैर्यस्य, नमस्कारैस्तथा त्रिभिः । ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं नाथं, धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥२१॥ शतषोडशदलारूढं, विद्यादेवीभिरन्वितम् । चतुर्विंशतिपत्रस्थं, जिनं मातृसमावृतम् ॥ २२ ॥ माया वेष्टत्रयाग्रस्थं, क्रौंकारसहितं प्रभुम् । नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालैर्दशभिर्वृतम् ॥ २३ ॥ चतुष्कोणेषु मंत्राद्यचतुर्बीजान्वितैर्जिनैः । चतुरष्टदशद्वीति द्विधाङ्कसंज्ञकैर्युतम् ॥ २४ ॥ दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लांकितेन च । चतुरस्रेण वज्राङ्क-क्षितितत्वे प्रतिष्ठितः ॥ २५ ॥ श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः समाराधयेज्जिनम् । तंसर्वपापनिर्मुक्तं, भजते श्रीः शुभप्रदा ॥ २६ ॥ जिनेशः पूजितो भक्त्य संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा । ध्या-

तस्त्वं यैः चणं वापि सिद्धिस्तेषां महोदय ॥ २७ ॥ श्रीपार्श्व मंत्रराजान्ते चिन्तामणि गुणास्पदम् । शान्तिपुष्टिकरं नित्यं, चुद्रोपद्रवनाशनम् ॥ २८ ॥ ऋद्धिसिद्धिमहाबुद्धिधृति-श्रीकान्तिकीर्तिदम् । मृत्युञ्जयं शिवात्मानं जपन्नानन्दितो जनः ॥ २९ ॥ सर्वकल्याणपूर्णः स्यात्, जरामृत्युविवर्जितः । अणिमादिमहासिद्धिं लक्षजापेन चाप्नुयात् ॥ ३० ॥ प्राणायाममनोमंत्रयोगादमृतमात्मनि । त्वमात्मानं शिवं ध्यात्वा स्वामिन् सिध्यन्ति जन्तव ॥ ३१ ॥ हर्षदः कामदश्चेति रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः । पातु वः परमानंदलक्षणः संस्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥ तत्वरूपमिदं स्तोत्रं सर्वमंगलसिद्धिदम् । त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं, प्राप्नोति च स हि श्रियम् ॥ ३३ ॥



॥ अथ आत्मरक्षास्तोत्रं ॥

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षाकरं वज्रपिंजराभं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं शिरस्कं शिरसिस्थितम् । ॐ नमोसिद्धसिद्धाणं मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं अंगरक्षातिशायिनी । ॐ नमो उवज्झायाणं

आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो सव्वसाहुणं मोचके पदायोः शुभे । एसो पंच नमोक्कारो शिलावज्रमयीतले ॥ ४ ॥ सव्वपावप्पणासणो वप्रोवज्रमयीवही । मंगलाणं च सव्वेसिं खादिरांगारखातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलम् । वप्रोपरि वज्रमयं पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महाप्रभावरक्षेयं क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्ठिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा । तस्य न स्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥

इति आत्मरक्षास्तोत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पंचषष्ठियंत्रगर्भितं श्रीचतुर्विंशतिजिनस्तोत्रम् ॥

आदौ नेमिजिनं नौमि संभवं सुविधिं तथा । धर्मनाथं महादेवं शान्तिः शान्तिकरं सदा ॥ १ ॥ अनंतं सुव्रतं भक्त्या नमिनाथं जिनोत्तमं । अजितं जितकंदर्पं चन्द्रं चन्द्रसमप्रभम् ॥ २ ॥ आदिनाथं तथा देवं सुपार्श्वं विमलं जिनं । मल्लिनाथं गुणोपेतं

धनुषां पंचविंशतिम् ॥ ३ ॥ अरनाथं महावीरं सुमतिं च जगद्-गुरुम् । श्रीपद्मप्रभुनामानं वासुपूज्यं सुरैर्नतम् ॥ ४ ॥ शीतलं शीतलं लोके श्रेयांसं श्रेयसे सदा । कुन्थुनाथं च वामेयं विश्वाभिनन्दनं विभुं ॥ ५ ॥ जिनानां नामभिर्बद्धः पंचषष्ठिसमुद्भवः । यन्त्रोयं राजते यत्र तत्र सौख्यं निरंतरम् ॥ ६ ॥ यस्मिन्गृहे महाभक्त्या यन्त्रोयं पूज्यते बुधैः । भूतप्रेतपिशाचादिभयं तत्र न विद्यते ॥ ७ ॥ सकलगुणनिधानं यंत्रमेतद्विशुद्धं, हृदयकमलकोशे धीमतां ध्येयरूपम् । जयतिलकगुरोः श्रीसूरिराजस्य शिष्यो वदति सुखनिधानं मोक्षलक्ष्मीनिवासः ॥ ८ ॥

इति ॥

॥ सरस्वतीस्तोत्रम् ॥

त्वं शारदा देवि समस्त शारदा विचित्ररूपा बहुवर्णसंयुता । स्फुरन्ति लोकेषु तवैव सूक्तयः सुधास्वरूपा वचसां महोर्म्मयः ॥ १ ॥ भवद्विलोलम्बकदर्शनादहो मन्दोपि शीघ्रं कविरेव जायते । तवैव माहात्म्यमखण्डमीक्ष्यते तवार्थवादः पुनरेव गीयते

॥ २ ॥ कर्पूरनीहारकरोज्ज्वलो तनुर्विभाति ते भारति शुक्लनीरजे। कराग्रभागे धृतचारुपुस्तका डिण्डीरहीरामलशुभ्रचीवरा ॥ ३ ॥ मरालबाला मलवामवाहना स्वहस्तविन्यस्त विशालकच्छपी। ललाटपट्टे कृतहेमशेखरा सन्ना प्रसन्ना भवतात्सरस्वती ॥ ४ ॥ सद्विद्याजलराशितारणतरी सद्रूपविद्याधरी। जाड्यध्वान्तहरी सुधाब्धिलहरी श्रेयस्करी सुन्दरी॥ सत्या त्वं भुवनेश्वरी शिवपुरी सूर्यप्रभाजित्वरी॥ स्वेच्छादानवितानिर्जरगवी सन्तापतांछित्वरी ॥ ५ ॥ सुरनरसुसेव्या सेवकेनापि सेव्या। भवति यदि भवत्या किं कृपा कामगव्या ॥ जगति सकलसूर्यस्त्वत्समाननभव्या। रुचिरसकलविद्या दायिका त्वं तु नव्या ॥ ६ ॥ यो भक्त्या सुरितो नवीति सततं जघ्नन्ति मौढ्यं महत्त्वत्सेवा च चरीकरीति तरसा वोभोति संश्रेयसां ॥ त्वं मातर्दरिधर्त्ति चेतसि निजे दद्र्ष्टिरोचिर्म्मयम्। तस्याग्रे नरिनर्ति योजितकरो भूपो नटीवत्स्वयम् ॥ ७ ॥ आख्यातुं तव देवि कोपि न विभुर्माहात्म्यमाप्लवो नो ब्रह्मा न च शंकरो नहि हरिर्नो वाक्पतिः स्वर्पतिः ॥ त्वच्छक्तिर्वरिवर्ति विश्वजननी लोकत्रयव्यापिनी। सा त्वं काचिदगम्यरम्यहृदया वाग्वादिनी पाहि माम् ॥ ८ ॥ स्तोत्रं पठेद्यः

श्रुतदेवतायाः । भक्त्यायुतः शुद्धमनाः प्रभाते ।। विद्याविलासं विपुलं प्रकाशं । प्राप्नोति पूर्णं कमलानिवासम् ।। ६ ।।

।। ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ।।

जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् । ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे ।। १ ।। जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेयाः पूजनीया विधिक्रमात् । पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ।। २ ।। पद्मप्रभस्य मार्तंडश्चंद्रप्रभस्य च । वासुपूज्यो भूमिपुत्रो बुधोप्यष्ट-जिनेश्वराः ।। ३ ।। विमलानंतधर्माराः शान्तिकुंथुर्नमिस्तथा । वर्द्धमानो जिनेन्द्राणां पादपद्मे बुधं न्यसेत् ।। ४ ।। ऋषभाजित-सुपार्श्वाश्चाभिनंदनशीतलौ । सुमतिः संभवः स्वामी श्रेयांसश्च बृहस्पतिः ।। ५ ।। सुविधेः कथितः शुक्रः सुव्रतस्य शनैश्चरः । नेमिनाथो भवेद्राहुः केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः जन्मलग्ने च राशौ च यदा पीड्यन्ति खेचराः । तदा संपूजयेद्धीमान् खेचरैः सहितान् जिनान् ।। ७ ।। पुष्पैर्गंधादिभिर्धूपैर्नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसद्द-शदानैश्च वासोभिर्दक्षिणान्वितैः ।। ८ ।। ॐ आदित्यसोममंगल-

बुधगुरुशुक्रशनैश्चरोराहुः । केतुप्रमुखाः खेटा जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥ ९ ॥ जिननामकृतोच्चारा देशनक्षत्रवर्णकै । स्तुताश्च पूजिता भक्त्या ग्रहाः संतु सुखावहाः ॥ १० ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा ग्रहाणां तुष्टिहेतवे । नमस्कारशतं भक्त्या जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ११ ॥ भद्रबाहुरुवाचेदं पंचमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः पूर्वाद् ग्रहशान्तिर्विनिर्मितः ॥ १२ ॥

॥ इति श्री नवग्रहशान्तिस्तोत्रम् ॥

॥ श्री गौतमाष्टकम् ॥

श्रीइन्द्रभूतिर्वसुभूतिपुत्रं पृथ्वीभवं गौतमगोत्ररत्नम् । स्तुवन्ति देवाः सुरमानवेन्द्राः स गौतमो यच्छतु वाञ्छितं मे ॥ १ ॥ श्रीवर्धमानस्त्रिपदीमवाप्य, मुहूर्तमात्रेण कृतानि येन । अंगानि पूर्वाणि चतुर्दशापि स गौ० ॥ २ ॥ श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीतं, मंत्रं महानंदसुखाय यस्य । ध्यायन्त्यमी सूरिवराः समग्राः, स गौ० ॥ ३ ॥ यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे, गृह्णन्ति भिक्षां भ्रमणस्य काले । मिष्टान्नपानाम्बर पूर्णकामाः, स गौ० ॥ ४ ॥ अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या, ययौ जिनानां पदवंदनाय ।

निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः स गौ० ॥ ५ ॥ त्रिपञ्चसंख्याशत-तापसानां तपःकृशानांनपुनर्भवाय । अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता, स गौ० ॥ ६ ॥ सदक्षिणं भोजनमेव देयं साधर्मिकं संघसपर्य-येति । कैवल्यवस्त्रं प्रददौ मुनीनां, स गौ० ॥ ७ ॥ शिवंगते भर्तरि वीरनाथे युगप्रधानत्वमिहैव मत्वा । पट्टाभिषेके विदधे सुरेन्द्रैः, स गौ० ॥ ८ ॥ त्रैलोक्यबीजं विज्ञानबीजं परमात्मबीजं परमेष्ठि-बीजम् । यन्नाममंत्रं विदधे सुरेन्द्रैः, स गौ० ॥ ९ ॥ श्रीगौतम-स्याष्टकमा दरेण प्रबोधकाले मुनिपुंगवा ये । पठन्ति ते सूरिपदं सूरिपद सदैवानन्दं लभन्ते सुतरां क्रमेण ॥ १० ॥

इति गौतमस्याष्टकम् ॥

॥ अथ बृहद् शान्तिः ॥

भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतांभक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवता मर्हदादि-प्रभावा,-दारोग्य श्रीधृति-मतिकरी क्लेश-विध्वंश-हेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावत-विदेह-सम्भवानां,

समस्त-तीर्थकृतां जन्मन्यासन-प्रकम्पानन्तर-मवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषो-घण्टा-चालना-नन्तरं सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे विहितजन्माभिषेकः शान्ति-मुद्घो-षयति, ततोऽहं कृता नुकार-मिति कृत्वा—'महाजनो येन गतः स पन्थाः' इति भव्य-जनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शान्तिमुद्घोषयामि। तत्पूजायात्रा-स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरम्, २ स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रायन्तां २, भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः, सर्वदर्शिनः। त्रैलोक्य-नाथा, त्रैलोक्य महिताः, त्रैलोक्ये-पूज्याः, त्रैलोक्येश्वराः, त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्री केवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायशः ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजः १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीतचतुर्विंशति-तीर्थंकराः ॥

ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, सम्भव, ३, अभिनन्दन ४,

सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चन्द्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुन्थु १७, अर १८. मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः ॥

ॐ श्रीपद्मनाभ १, शूरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शतकीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्त १६, समाधि १७, संवर १८, यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य्य २३, भद्रंकर २४, एते भाव-तीर्थ-करा जिनाः शान्ताः शान्ति-करा भवन्तु । ॐ मुनयो मुनि-प्रवरा रिपु-विजय-दुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्ग-मार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम् ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन ८, सुग्रीव ९, दृढरथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुम्भ १९, सुमित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन

२३, सिद्धार्थ २४, इति वर्त्तमान-चतुर्विंशति-जिन-जनकाः ॥

ॐ श्री मरुदेवी १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथ्वीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ६, नन्दा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सुव्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १६, पद्मा २०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४, इति वर्त्तमानजिनजनन्यः ॥

ॐ श्री गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुम्बुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ६, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गन्धर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १६, वरुण २ , भृकुटी २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशान्ति २४. इति वर्त्तमानजिनाः यक्षाः ॥

ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शान्ता ७, भृकुटि ८, सुतारका ६, अशोका १०, मानवी ११, चण्डा १२, विदिता १३, अङ्कुशा १४, कन्दर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धर-

णप्रिया १६, नरदत्ता २०, गान्धारी २१, अम्बिका २२, पद्मा-
वती २३, सिद्धायिका २४, इति वर्त्तमान- चतुर्विंशति-तीर्थंकर-
शासनदेव्यः ।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति-कीर्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्या-साधन प्रवेश–विवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्ति ते जिनेन्द्राः । ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृङ्खला ३, वज्राङ्कुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता, ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ६, गान्धारी १०, सर्वा-स्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अच्छुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६, एताः षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्याय-प्रभृति-चातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमण-सङ्घस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहा-श्चन्द्रसूर्याऽगारक-बुध–बृहस्पति–शुक्र–शनैश्चर–राहु–केतु-सहिताः सलोकपाला सोम–यम–वरुण–कुवेर–वासवादित्य स्कन्द–विना-यका ये चान्येऽपि ग्राम–नगर क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां २ अक्षीण–कोश–कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ॥ ॐ पुत्र-मित्रभ्रातृ--कलत्र–सुहृद्– स्वजन– संबन्धि–बन्धु–वर्गसहितानित्यं चामोद–प्रमोद–कारिणो भवन्तु । अस्मिंश्च भूमण्डले आयतन-

निवासिनां साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां रोगोपसर्ग-व्याधि-दुःख-दुर्भिक्ष-दौर्मन-स्योपशम-नाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि ऋद्धि-वृद्धि-मांगल्योत्सवा भवन्तु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि शाम्यन्तु, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्य-स्यामराधीश,-मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्ट-दुष्ट-ग्रह-गति-दुस्वप्न-दुर्निमित्तादि । सपादित-हित-संपद्, नाम-ग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥ श्रीसंघ- पौर-जन-पद,-राजाधिप-राजसंन्निवे-शानाम् । गोष्ठिक-पुरमुख्याणां, व्याह-रणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्री श्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, श्रीपौर-लोकस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजा-धिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराज-संनिवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु । ॐ स्वाहा २ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-यात्रा-स्नात्रावसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुङ्कुम चन्दन-कर्पूरागुरु-धू -वास-कुसुमाञ्जलि-समेतः स्नात्रपीठे श्री संघसमेतः शुचिः शुचिवपुः पुष्पवस्त्र-चन्दनाभरणालंकृतः, चन्द-

नतिलकं विधाय पुष्प मालां कण्ठे कृत्वा शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्ति-पानीय मस्तके दातव्यमिति । नृत्यन्ति नृत्यं मणि-पुष्प-वर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मंगलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थयर-माया, सिवादेवी तुम्ह नयर-निवासिनी अम्ह सिव तुम्ह सिवं, असुहोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥ २ ॥ शिवमस्तु सर्व- जगतः, परहित-निरता भवन्तु भूत-गणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वर ॥ ३ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वध-र्माणां जैनं जयति शासनम् ॥ ४ ॥

इति वृद्धशान्तिः समाप्तः ॥

॥ अथ तिजयपहुत्त नाम स्मरणम् ॥

तिजयपहुत्तपयासय–अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं । समयक्खित्त-ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवर समूहो । नासेउ सयल दुरिअं, भविआणं

भत्तिजुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयालावि य, तीसा पन्नहत्तरी जिणवरिंदा। गहभूअरक्खसाइणि- घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसावि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो । वाहिजल-जलणहरिकरि–चोरारिमहाभयं हरउ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह चेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं–देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ४ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंसः हरहुँहः तह य चेव सरसुंस । आलिहियनामगब्भं, चक्कं किर सव्वओ भद्दं ॥ ५ ॥ ॐ रोहिणि पन्नती, वज्जसिंखला तह य वज्जअंकुसिआ । चक्केसरि नर-दत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥ ६ ॥ गंधारी महाजाला माणवि वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता । माणसि महमाणसिआ, विज्जा देवीओ रक्खंतु ॥ ७ ॥ पंचदसकम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरी जिणाण सयं । विविहरयणाइवन्नो–वसोहिअं हरओ दुरिआइं ॥ ८ ॥ चउतीसअइसय जुआ; अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा । तित्थ-यरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥ ९ ॥ ॐ वरकणयसंख-विद्रुम—मरगयघणसन्निहं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १० ॥ ॐ भवणवइ वाणवंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ । जे केवि दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवस-

मंतु मम ॥ स्वाहा ॥ ॥ ११ ॥ चंदणकप्पूरेणं, फलए लिहिउण खालिअं पीअं । एगंतराइगहभूह—साइणिमुग्ग पणासेइ ॥१२॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं । दुरिआरि विजयवंतं, निभ्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १३ ॥

इति ॥

॥ अथ जयतिहुअणस्तोत्र लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस दुरिअकरि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलंघियाण भुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंभणय पुरट्ठिय ॥ १ ॥ तइं समरंत लहंति झत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धण्ण सुवन्न हिरण्ण पुण्ण जणभुंजहि रज्जहि ॥ पिक्खहि मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासप साइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्ख सुक्खहि कुण महजिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्ण कण्णनट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीणखएणसुण्ण नरसल्लिय सूलिण ॥ तुह जिणसरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव, जय धण्णंतरि पास महवि तुह रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस

मंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण, भुवणप्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्जइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत तंत जंताइं वि सुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्गविगंजइ ॥ दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दयकरि, दुरिअइं हरउ सुपासदेव दुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथंभेइ भीमदप्पुद्धुर सरवर, रक्खस जक्ख फणिंद विंदचोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरउद्दखुद्दपसुजोइणि जोइय इय तिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अत्थ अणत्थ तत्थभत्तिप्भर निप्भर, रोमंचंचिअचारुकाय किण्णरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअकलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमणकमलभसलभय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतु पिआमह, थंभणयट्ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहु विहवण्णुअवण्णु सुण्णु वण्णिउछप्पण्णहिं, मुक्खधम्मु कामत्थकाम नर नियनियसत्थहि ॥ जं झायइ बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ, सो जो जोइ अमण कमलभसल-

सुह पास पवंद्धउ ॥ ९ ॥ भय विब्भल रणभणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयणविसगणुसुग्णगग्गरगिरकरुणय ॥ तइ सहसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महविज्झविसज्झसइ पास भय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं पासवियसंतनित्तपत्त तपवित्तिय, वाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपुलयइय ॥ मण्णाहिमण्णुमण्ण पुण्णअप्पाणं सुरनर, इय तिहुअण आणंदचंद जय पास जिणे-सर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंट टंकारवपिल्लिअ, वल्लरमल्ल-महल्लभत्तिसुरवर गज्जुलिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवतयंति भवणेहि महूसव, इय तिहुअण आणंदचंद जय पासुहुब्भव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनियरविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सयल-पयत्थसत्थवित्थरिअ पहामर ॥ कलिकलुसिअ जण घूअलोयलो यणहअगोयर, तिमिरइं निरुहर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त माणव मइ मेइणि, अवरा-वरसुहुमत्थबोह कंदल दलरेहिणि ॥ जायइ फलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह दिसि पास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरियदुहवणु दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगम वारणु । जय जंतुहजणएण तुल्ल-

जंजणि यहियावहु, रस्सु धम्म सो जयउ पास जय जंतु पिआ-
मह ॥ १५ ॥ भुवणारण्णनिवास दरिअपरदरिसणदेवय, जोइ-
णिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥ तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठ
अविसंठुल चिट्ठहिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं
॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल फलिणी
कंदलदलतमाल निल्लुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग
संसग्ग अगंजिअ, जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणय पुरट्ठिअ
॥ १७ ॥ महमणतरलुपमाणनेय वायावि विसंठलु, नियतणुरवि
अविणयसहाव आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पुपमायदेव कारुण्ण
पवत्तउ, इयमइमाअवहीरपासपालहिविलवं तउ ॥ १८ ॥ किंकि-
कप्पिउणेयकलुण किंकिवनजं पिउ, किं वनचिट्ठिउकिट्ठदेवदीण-
यमविलंबिउ ॥ कासुनकियनिप्फल्ललल्लुअह्मेहिदुहत्तइं तहवि न
पत्तउताण किंपि पइं पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहु
माय वप्प तुहुं मित्तपियंकरु, तुहुं गइतुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुँ
गुरु खेमंकरु ॥ हउं दुहभरभारिअवराउ राउलनिप्भग्गउ, लीणउ
तुह कमकमल सरणजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइंकिंनिक्कयनी-
रोयलोय किंपिवियसुहसय, किं विमइं मंतमहंतकेवि किंविसाहि-

पसिवपय ।। किवि गंजिअरिउवग्गकेविजसधवलिअ भूअल, मइं अवहीरहिकेणपाससरणागयवच्छल ।। २१ ।। पच्चुवयारनिरीहना-हनिफ्फण्ण पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिक्कपरा-यण ।। सत्तुमित्त सम चित्तवित्तिनयनिंदिअसममण, मा अवही-रिअजुग्गओविमइं पासनिरंजण ।। २२ ।। हउं बहुविहदुहत्त-गत्ततुहं दुहनासणपरु, हउं सुयणहकरुणि कठाणु तुहुं निरुकरु-णाकरु ।। हउं जिण पासअसामिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं झखंतइय पासन सोहिअ ।। २३ ।। जुग्गा-जुग्ग विभागनाहनहुजोअणतुहसम, भवणुवयारसहावभाव करुणा-रससत्तम ।। समविसमह किंवण ना एइ भुविदाहुसमंतउ, दुहबंधव पासनाह मइं पाल थुणंतउ ।। २४ ।। नयदीणहदीणयमुएवि अएणविकिविजुग्गव, जं जोइयउवयारुकरइउवयारसमुज्जय ।। दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिण चत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पास-पालहिमइं चंगउ ।। २५ ।। अहअएणुविजुग्गयविसेसकिविमएण-हि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाह समग्गह ।। सुच्चिअ-किल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह किं अएणुं ण तंचेव देव मामइं अवहीरह ।। २६ ।। तुह पत्थण नहु होइ विहलु जिण-

जाण उ किं पुण, हउं दुक्खिउ निरुसत्तवत्तदुक्कहु उस्सु यमण ॥ तं मणणाउ निमिसेण एउ एउयिज्जइ लब्भइ, सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पप पासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरि सुनमुणउवहुं जंपिउ ॥ अण्णु णं जिणजगतुहसमोविदक्खिन्नदयास उ, जइ अवगिण्णसि तुंहिजअहहकिंहोइसहयासउ ॥ २८ ॥ जइ तहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलंविउ, तउजाणुं जिणपास तुम्ह हउंअंगीकरिअउ ॥ इयमहइत्थिउ जं न होइ सातुहओहावण, रक्खंतह नियकित्तिणेय जुज्जइअवहीरण ॥ २९ ॥ एहमहारिहजत्तदेवइहुन्हवणमहूसउ जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ ॥ एम मइं पसीहसुपासनाहथंभणयपुरट्ठिअ, इय मुणिवरुसिरि अभयदेव विण्णवइ आणिंदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंभनकृत थंराजश्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ।



गुरु स्तुति

यथा प्राणा नराधारास्तथैव सुखसागरः ॥ नित्यं नमामि नाथ त्वां त्वमेव शरणं मम ॥ १ ॥ चखान दुष्टकर्माणि दिव्य-ज्ञानदिवाकर । चारित्ररत्नभण्डारदर्शनं विमलं कृतम् ॥ २ ॥ दानशीलतपोभाव अष्टमातृपरायणः । आबालब्रह्मचारी च भाविता भावना सदा ॥ ३ ॥ कषायमदनिद्रादिपञ्चेन्द्रियाणि शेष : । जितानि हास्याजेन्नूनं वैरिणी विकथाजिता ॥ ४ ॥ निर्जितौ काम-मोहौ च रागद्वेषविवर्जितः । धौतं सकलमिथ्यात्वं सम्यक्त्वराग-रंजितः ॥ ५ ॥ नयनिक्षेपसंवेत्ता गुणस्थानं विशेषतः । विजा-नासि गुणग्राहिन् स्याद्वादश्च महारसम् ॥ ६ ॥ पवित्रनामजापेन ज्ञानादिसकलं फलं लभन्ते सर्वधीमन्तो नैवात्र कोपि संशयः ॥७॥ त्वमेव प्राणकाधारस्त्वमेव हितकारकः । त्वमेव सुखसौन्दर्यंस्त्व मेव भवतारकः ॥ ८ ॥ त्रैलोक्यसिन्धोर्भवतापहर्तुर्गुरोः प्रसाद-प्रभुतांकितांतः । तस्यैव सानन्दसुखाम्बुराशेः पादौ सदानन्दरसेन नौमि ॥ ९ ॥

॥ शुभम् ॥

— —

॥ श्रीगौडीपार्श्वनाथवृद्धस्तवनम् ॥

दोहा । वाणी ब्रह्मावादिनी, जाणेजगविख्यात । पासतणा गुणगावतां मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगै अणहिलपुरै, अह-मदावादे पास । गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ सुभ वेला सुभ दिन घडी मुहुरत एक मंडाण । प्रति-माते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥ (ढाल) गुणहि वि-शाला मंगलीक माला, वामानो सुत साचोजी । धण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो धणी जाचोजी (गु०) ॥४॥ अणहिलपुर पाटण माहे प्रतिमा, तुरक तणे घर हुं तोजी । अथनी भूमि अथनी पीडा, अथनी वात विगूती जी (गु०) ॥ ५ ॥ जागंतो जत्त जेहनै कहियै, सुहणो तुरकनें आपे जी । पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुम्ह सतापे जी (गु०) ॥६॥ अह ऊठीने परगट करजे, मेघा गोठी ने देजे जी ! अधिको म लेजे ओछो म लेजे, टका पांचसै लेजे जी (गु०) ॥ ७ ॥ नहिं आपिस तो मारीस मुरडीस, मोर बंध बंधास्ये जी पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुम्ह. लछि घणी घर जास्यै जी (गु०)

प्रयाण कटको कोई न दीसै पहाण । देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम गरथें विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्यें किहां सिलावटो किम आवे इहां । चिन्तातुर थयो निद्रा लहै, यत्तराज अगीने कहैं ॥२८॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीजे तिहां । स्वस्तिक सोपारीनें ठाणि पाणी तणी उल्लटस्यें खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जल-नीरसी कूओ ! खारा कुवा तणो इह सैनाण, भूमि पड्यो छें नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसै कोड पराभवियो किसमिसै । किहां थकी तुं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थावियो, सिलावटने सुहणो दियो ! रोग गमीने पूरूं आस, तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो नैण । गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेडवा । ३३ ॥ सिला-वटो आवै मूरमो, जिमें खीर खाँड घृत चूरमो । वईं घाट करें कोरणी, लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंभ २ कीधी पुतली, नाटक कौतुक करती रली । रङ्गमंडप रलियामणो रसै, जोतां मानवनो मन वसै ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग

समो भडे आवास । दिवस विचारी इंडो चढ्यो ततखिण देवल ऊपर चढ्या ॥ ३६ । शुभ लगन शुभ वेला, वास, पद्मासण बेठा, श्रीपास । महिमा मोटी मेरु समान, एकलमिल वगडे रहै-वान ॥ ३७ ॥ बात पुराणी मैं सांभली, स्तवन मांहि सूधी सांकली । गोठी तणा गोतरिया अछै, यात्रा करीने परने पछै ॥ ३८ ॥ (दोहा) विघन विडारन यक्ष जगि, तेहनो अकल सरूप । प्रीत करे श्रीसंघने, देखाडै निज रूप ॥ ३९ ॥ गिरुओ गोडी पास जिन, आपे अरथ भंडार । सांनिध करै श्री सङ्घने, आसा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणै नील हय, नीलो थई असवार । मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥ ४१ ॥ (ढाल) वरण अढार तणो लहै भोग, विघन निवारे टालै रोग । पवित्र थई समरै जे जाप, टालै सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घरि धन नो सुत, आपै अपुत्रीयाने पुत्र कायरने सूरापण धरै, पार उतारै लच्छी वरै ॥ ४३ ॥ दोभागी ने दे सौभाग; पग विहूणाने आपै पग । ठाम नहीं देहने द्यै ठाम, मनवांछित पूरैं अभिराम ॥ ४४ ॥ निराधाराने द्यै आधार, भवसायर उतारे पार । आरतियानी आरत भंग, धरै

ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समरथा सहाय दीयै यक्ष राज, तेहना मोटा अछै दिवाज । बुद्धि हीण ने बुद्धि प्रकाश, गूंगाने दे वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दातार, भय भजण रंखण अवतार । बंधन तूटे बेडी तण। श्री पार्श्व नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा) श्री पार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल । हस्ती जूथ दूरे टलै, दुद्धर सिह सियाल । ४८ ॥ चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उद्दकार । विष ऊतरे संग्रामें जय जय कार ॥ ४६ ॥ रोग सोग दारिद्र दुख, दोहग दूर पुलाय । परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (कडखानी चाल) उंजितुं २ उंजि उपमम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्री पार्श्व अक्षर जपंते । भूत ने प्रेत झोटिंग व्यन्तर सुग, उपसमे वार इक्वीस गुणते (उं०) ॥ ५१ ॥ दुद्धरा रोग सोग जरा जंतने ताव एकान्तरा दुत्तपंते । गर्भबन्धन त्रणं सर्प विछु विपं, चालिका वालमेवा झखंते (उं०) ॥५२॥ साइणी डाइणी रोहिणी रंकनी, फोटका मोटका दोप हुंते । दाढ़ उंदरतणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकराल दंते ॥ ५३ ॥ (उं०) धरणेंद्र पद्मावती समर सोभावती, वाट आघाट अटवी अटंतै ।

लखमी लोदुं मिलैं सुजस वेला उलैं, सयल आस्था फलै मन हसंतै (उं०) ॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरें कानपीडा टलै ऊवरै सूल सीसग मणंते । वदत वर प्रीतसुं प्रीतिविमल प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्ते (उंजितुं) ॥ ५५ ॥

इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी बृद्धस्तवनं समाप्तम् ॥

॥ अथ गुर्वष्टकम् ॥

नमाम्यहं श्रीजिनदत्तसूरिं गुणाकरं किन्नर पूज्यपादम् ॥ यतीश्वरं तुष्टिकरं स्वरुपं लावण्यगात्रं बहुसौख्य कारम् ॥ १ ॥ भूपानराये प्रणमंति नित्यं तेषां मनीषां सफलीकरोति ॥ लक्ष्मी-र्यशो राज्यरतिं प्रसूते विद्यावरं श्रीललनासुखानि ॥ २ ॥ भव्या नराये तवपादसेवां कुर्वंति सत्पुत्रालभंत एव ॥ न दुखः दौर्भाग्य भयंन मारिं स्मरंति ये श्रीजिनदत्तसूरिम् ॥ ३ ॥ कविः स्वबुध्या-गुरुसंनिभोपि कस्ते गुणान् वर्णयितुं समर्थः तथापित्वद्भक्तिरतो मुनींद्रः करोमि किंचिद्दगुणवर्णनं ते ॥ ४ ॥ महार्णवे भूधर मस्तकेपि स्मरंति ये श्रीजिनदत्तसूरिम् ॥ सुखैः सहायांति जना-स्त्वधास्त्रि ततोभवंतं प्रणमामि कामम् ॥ ५ ॥ जैनाब्जसंबोधन

निशिस्वापाधीनं निशदिनमधीनौ समयीनां । परंत्राणीर्लच्म्यो-निलियमपिलतद्दाननियुणौ ॥ सदायौ वर्त्तेते जयत इव पाथोज-युगलं, समृद्धयर्थं ॥ २ ॥ चिपंतौतौ प्रेच्चां मगसिरुहयोर्यौ मृदु-लयो-र्जपापुढपामासोः किशलयजिताशेपमह सोः ॥ लसल्लं खा लच्मप्रकटितपरा श्रीसदनयोः समृद्धर्थवंदे ॥ ३ ॥ सुरेभ्यः स्व-स्थेभ्यः क्वतिपयदिनैर्यः फलमथो । कदाचिहते द्राक्श्रियमपि दरिद्राय परमाम् ॥ सुरद्रुँ त्यत्कोपाप्तइतिवुधौ यौ भुविगतौ । समृद्धयर्थंवंदे ॥ ४ ॥ सुरैरास्त्राद्य ते परमगुरुधर्मोपदिशतः । सदा कामं पीता मृतरसवरांशैरपिगिरः ॥ श्रुता यस्य श्रेयः श्रिय मपिदिशंतिस्थिरधियां । समृद्धयर्थं० ॥ ५ ॥ निधिस्सर्वाश्रीणा मनधिकरणौ मर्वविपदाम् । मृदुस्निग्धौ शौणावुपचितनरवौ गूढ चुटिकौ ॥ सयाना ग्रोत्तु गप्रपदपदशाखाविलसितौ, समृ ॥ ६ ॥ ययोरर्चा सूते धनसुखधरा धामरमणिः शरीरारोग्यत्वं विनयन-यविद्यानिपुणताम् ॥ गुणा नौदार्यादीनपितनयलच्मीः श्रिनृटणां । समृद्धयर्थं० ॥ ७ ॥ भयंकारागारा मयसमरपारींद्र फणमृ-न्महा पाशवारः द्विरदवनवैश्वानरभवम् ॥ नडाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजय-त्समृरणतः । समृद्धयर्थं० ॥ ८ ॥ इत्थं श्रीजिनपद्मसूरिरचितं

दिव्याष्टकं सद्गुरोः पुण्यं मंत्रमयं मनोज्ञफलदं पापौघविध्वंसनम् ॥ भक्त्या यः पठति प्रभात समये सर्वत्र तस्य ध्रुवं । वश्या भूपतयो भवंति सततं लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी ॥ ९ ॥ इति समाप्तम् ॥

॥ सरस्वती स्तोत्रम् ॥

नमस्ते शारदादेवि काश्मीर प्रतिवासिनी । त्वामहं प्रार्थये मातर्विद्यादानं प्रदेहिमे ॥ १ ॥ सरस्वती मया दृष्टा । देवीकमल लोचना ॥ हंसस्कंधसमारूढा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥ २ ॥ सरस्वती प्रसादेन । काव्यं कुर्वन्ति पण्डिताः ॥ तस्मान्निश्चलभा-वेन । पूजनीया सरस्वती ॥ ३ ॥ प्रथमं भारतीनाम । द्वितीयं चसरस्वती ॥ तृतीयं शारदादेवी । चतुर्थं हंस वाहिनी ॥ ४ ॥ पंचमं जगद्विख्याता, षष्ठं वागीश्वरी तथा ॥ सप्तमं कुमारी प्रोक्ता । अष्टमं ब्रह्म चारिणी ॥ ५ ॥ नवमं त्रिपुरादेवी । दशमं ब्राह्मणिसुत ॥ एकादशंतु ब्राह्मणी । द्वादशं ब्राह्मवाहिनी ॥ ६ ॥ वाणी त्रयोदशिनाम । भाषाचैव चतुर्दशी ॥ पंचदशं श्रुतादेवी । षोडशं श्रीर्निगद्यते ॥ ७ ॥ एतानि षोडशनामनि, प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥ तस्य सतुष्यते देवी । शारदा वरदायिनी ॥ ८ ॥ याकुं-

देन्दुतुषारहारधवला या चन्द्रबिंबानना। या त्रैलोक्य विभूषणा भगवती या राजहंसप्रिया॥ या पद्मोदलनेत्रपद्मयुगला या जातिपुष्पप्रिया। सा नक्षत्रललाटपट्टतिलका सा शारदा पातुमाम् ॥९॥ या कुंदेन्दुतुषारहारधवला या श्वेत पद्मासना। या वीणा वरदंड मंडितकरा या शुभ्र वस्त्रावृता॥ या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदावन्दिता। सा मां पातु सरस्वती भगवतीनिःशेष जाड्यापहा॥ १० ॥ इति समाप्तम् ॥



छन्द व पद संस्मरतो

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ छन्द ।

सेवो पास संखेसरो मनशुद्धे । नमो नाथ निश्चेकरी एक बुद्धे । देवी देवता अन्यने स्यु नमो छो, अहो भव्यलोकां कांई भमो छो ॥१॥ त्रैलोक्य ना नाथ ने स्यु तजो छो । पड्या पास मां भूत ने स्यु भमो छो ॥ सुर धेनु छोड़ी अजा स्यु अजो छो । महा पंथ मूंकी कुपंथे व्रजो छो ॥२॥ तजे कौन चिन्तामणी कांचमाटे । ग्रहे कौन रासभ ने हस्तिसाटे ॥ सुर द्रुम उपाडी कौन आकड़ोने, महामूढ ते आकुला अंतपावे ॥३॥ कहां विश्वनाथं किहां अन्यदेवा । करो एकचित्तो प्रभु पार्श्व सेवा ॥४॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं सहु देवने ते करे छे अनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे । तेहना दुःख दारिद्र दूरे पलावे ॥५॥ पायी मानुसो ने वृथा का गमो छो । कुशीले करी देहने कां दमो छो ॥ नहीं मुक्तिवासं विना वीतरागं भजो भगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥६॥ हृदयरत्न भाषे सदा हेत आणी । दयाभाव कीजे मोहे दास जाणी । म्हारे आज मति मेह बूठा । प्रभु पास संखेसरो आप तूठा ॥७॥

श्री शांतिनाथजी का पद ।

सारद मात नमूं सिर नामी । हूं गाऊं त्रिभुवन के स्वामी ॥ संतहि संत जपे सहु कोई । ता घर शान्ति सदा सुख होई ॥१॥

शान्ति जपीने कीजे कामा। सो ही काम हुए अभिरामा॥ शान्ति जपी परदेश सिधावे। ते कुशले कमला लहिआवे॥ २॥ गर्भ थकी प्रभु मारि निवारी। शान्त हि नाम दियो महतारी॥ जे नर शान्ति तणा गुण गावे। ऋद्धि अचिंती सो नर पावे॥ ३॥ जा नर को प्रभु शान्ति सहाई। ता नर को कछु आरति नाहीं। जो कछु वंछे सो ही पूरे। दारिद्र दुष्ट मिथ्यामति चूरे॥ ४॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकाशी। घट घट अन्तर के प्रभु वासी॥ स्वामी स्वरूप कह्यो नहिं जावे। कहतां मो मन अचरज थावे॥ ५॥ डार दिये सवही हथियारा। जीत्या मोहतणा दल सारा॥ नारदजी शिव सूं रंग राचे। राज तजी पण साहिव सांचे॥ ६॥ महा वलवन्त कही जे देवा। कायरकुन्थ एक गणेवा॥ ऋद्धि सयल प्रभु पास कहीजे। भिक्षा आहारी नाम भणीजे॥ ७॥ निन्दक पूजक हैं सत भावक। पण सेवक को है सुखदायक। तज्यो परिग्रह तें जगनायक। नाम अतीत सबे विधिलायक॥ ८॥ शत्रु मित्र समचित्त गिनीजे। नाम देव अरिहन्त गुणीजे॥ सकल जीव हितवन्त कहीजे॥ सेवक जानि महापद दीजे॥ ९॥ सायर जैसा होत गम्भीरा। दोष नहीं इक मांहि शरीरा॥ मेरु अचल जिम अंतरयामी। पण न रहे प्रभु एकणठामी॥ १०॥ लोक कहे जिनजी सब देखे। पण सुपनो कवहिं नहीं पेखे॥ रीस विना बावीस परीसह। सेना जीती तें जगदीसे॥ ११॥ मान विना जग आण मनायो। माया विना सबसूं लय लायो॥ लोभ विना गुण राशि

ग्रहीजे । भिक्षु भये त्रिगडो सेवीजे ॥ १२ ॥ निग्रन्थ पणे शिर छत्र धरावे । नाम यतीपन चवर ढुलावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण। आगल चक्र चले अरिदारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भजीजे। कर्म सबे को मूल खनीजे ॥ चउविह संघज तीरथ थापे : लच्छि घणी देखे नखे आपे ॥ १४ ॥ विनयवन्त भगवन्त कहावे । ना कहू को सीस नमावे ॥ अकिंचन को पद धरावे । पण सोवन पद पंकज ठावे ॥ १५ ॥ तज तरुणी निजगुण को ध्यावे । शिव रमणी को साथ चलावे ॥ राग नहीं पण सेवक तारे । द्वेष नहीं निगुण संग वारे ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्भुत कहिये । तेरा गुण को पार न लहिये ॥ तूं प्रभु समरथ साहिब मेरा । हूं मनमोहन सेवक तेरा ॥ १७ ॥ तुं रे त्रिलोक तणो प्रतिपाला ॥ हुं रे अनाथ अधीर प्रतिपाला ॥ तुं सरणागत राखणधीरा । तूं वलि तारिक छो वड़वीरा ॥ १८ ॥ तोहि जिसो वड़भागजपायो । तो मेरी कारज चढ़े सवायो ॥ कर जोड़ी प्रभु विनवुं तोसूं । कर कृपा जिनवरजी मोसूं ॥ १६ ॥ जन्म मरण निवारी वारो । भवसागर थी पार उतारो ॥ श्री हथणापुर मंडण सोहे । तहां श्री शान्तिमन मोहे ॥ २० ॥ श्री परम सागर गुरु पास पसाये । श्रीगुणसागर के मन भाये ॥ जे नर नारी इकचित ध्यावे । ते मनवांछित शिवसुख पावे ॥ २१ ॥

श्री नवकार मंत्र का छन्द

सुख कारण भवियण, समरो श्री नवकार। जिन शासन आगम चवदे पूरव सार ॥ १ ॥ इण मंत्र नी महिमा, कहतां न लहे पार। सुर मरु जिमि चिंतित, वांछित फल दातार ॥ २ ॥ सुर दानव मानव, सेव करे कर जोड़। भूमण्डल विचरे, तारे भविजन कोड़ ॥ ३ ॥ सुर छंदे विलसे, अतिशय जास अनन्त। पहले पद नमिये, अरिगंजण अरिहन्त ॥ ४ ॥ जे पनरे भेदे, सिद्ध थया भगवन्त। पंचम गति पोहता, अष्ट कर्म करि अन्त ॥ ५ ॥ कर अकल सरुपी पंचानतक जेह। जिनवर पय प्रणामूं, बीजे पदवलि जेह ॥ ६ ॥ गच्छभार धुरधंर, सुन्दर ससियर सोम। करि सारण वारण, गुण छत्तीसे तोम ॥ ७ ॥ श्रुत जाणशि रोमणी, सागर जेम गंभीर। तीजे पद नमिये, आचारज गुण धीर ॥ ८ ॥ श्रुतधर गुण आगम, सूत्र भणावे सार। तप विधि संयोगे, भापे अरथ विचार ॥ ९ ॥ मुनिवर गुणयुत्ता जे कहिये उवझाय। चौथे पद नमिये, अहनिसि तेहना पाय ॥ १० ॥ पंचाश्रव टाले, पा लेपंचाचार। तपसी गुणधारी, वारी विपय विकार ॥ ११ ॥ त्रसथावर पीहर, लोक मांहे जे साध। त्रिविधे ते प्रणमूं, परमारथ गण लाध ॥ १२ ॥ अरि करि हरि सायण डायण भूत वेताल। सवि पाप पणासे, थासे मंगल माल ॥ इण समर्या संकट, दूर टले ततकाल। जंपे गुण गुण इम, सुर वट सीस रसाल ॥ १४ ॥

श्री सोलह सती छन्द

आदिनाथ आदि जिनवर वंदी सफल मनोरथ कीजिये ए। प्रभात उठे मंगलीक कामे सोले सती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥ बाल-कुमारी जगनहितकारी, ब्राह्मी भरतनी बेनडीरा। घट घट व्यापक अन्तयरूपे, सोले सती मांहे जेवडी ए ॥ २ ॥ वाहूबली भगनी सतिय शिरोमणि सुन्दरी नामे रिषभ सुता ए। अंगे स्वरूपी त्रिभुवन मांहे, जेह अनुपम गुणमुता ए ॥ ३ ॥ चन्दनबाला बाल पणाथी, शीयलवती शुधश्राविकाए। उड़दना बाकुला वीरे पडिलाभ्या, केवल लही व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन सुता धारणी नंदनी, राजमती नेमवल्लभाए। जीवन भे से काम ने जीत्यो, संगम लही देव दुल्लभाए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपद तनया बखानिये ए। एक सौ आठे चीर पुराण, सीयल महिमा सुयश जाणिये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृप नी नारी निरुपम कौशल्या कुलचन्द्रिका ए। शीयल सजनी राम जनिता, पुण्यमणि परनालिका ए ॥ ७ ॥ कोसीबक ठामे सतनीक नामे, राज करे रंगराजियो ए। तिस घर घरणी मृगावती सती, सुरभुवने जस गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलसा सांची शियल न काची, राची नहीं विषया रसे ए। मुखड़ो जोतां पाप पुलावे, नाम लेतां मन हुलसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी जेहनी कामिनी, जनक सुता सीता

सतीए । जग सहु जाणे धीज करंतां, अनल सीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालनी वांधी, कुआ थकी जल काढ़ियो ए । कलंक उतारवा सतिय सुभद्रा, चंपा पोल उघाड़ियो ए ॥ ११ ॥ सुर नर वन्दित शियल अखण्डित, शिवा शिवपदगामिनीए । जेहने नामे निरमल थइये, वलिहारी तस नामिनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरे पाण्डु रानी, कुंतीनामे कामिनी ए । पांडव माता दसे दसा रवी, वहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामे शीलव्रती नाम से शीलवृत धरिणी, त्रिविधे तेहने वन्दिये ए । नाम जपन्तां पातक जावे दर्शन दुरित निकन्दिये ए ॥ १४ ॥ निषिधा नगरी नल नरिन्दनी, दमयन्ती तस गेहनी ए । सङ्कट पड़तां शीयल राख्यो । त्रिभुवन कीरति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनङ्ग अजीता जगजन पुनीता, पुष्प चूला ने प्रभावती ए । विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी सती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ सतियन नामा मन अभिरामा, दुःख दोहग कुं हरता ए ॥ भवियण त्राता सिद्धियन दाता, ऋद्धियन कर्त्ता गुणे युता ए ॥ १७ ॥ वीरे भापी शास्त्रे साखी, उदय रतन भाषे मुदा ए । प्रभातेऊठि जे नर भणसे, ते लहसे सुख सम्पदा ए ॥ १७ ॥

श्री महावीर चौमासी

श्री अरहिन्त अनन्तगुण, अतिशय पूरण गात्र । मुनि जे ज्ञानी संयमी, ते कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतनी अनुयोदाना, करतौ

जीरण सेठ । श्रावक ऊँच गति लहे, नव ग्रैवेयक हेठ ॥ २ ॥ दस चौमासा वीरजी विचरत संगमवास । वैशालपुर आविया, इग्यारमी चौमास ॥३॥ढाल। चौमासी ग्यारमी जी, विचरत साहस धीर । वैशाला पुरी आविया जी स्वामी महावीर। जगतगुरू त्रिसला नंदनजी ॥ १ ॥ भले मैं भेट्या श्री जिनराय सखीरी, चौक पुरावी आज मेरे भाग अनूपम थाय ॥ जगत० ॥ २ ॥ बलदेव नीवेदे हरो जी तिहांदे प्रभु काउसगए लीध । पचख्खान चौमासी ना जी, स्वामी ए तप कीध ॥जग० ॥३॥ जीरण सेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावक धर्म । आकारे तिण ओलख्या जी, जे जाने जिन मर्म ॥ जग० ॥४॥ आज अछे उपवासिया जी, स्वामी श्रीवर्धमान । काले सही प्रभु जीमसे जी, से हथ देसूं दान ॥जग० ॥५॥ सदा सेठ इम चिंतवेजी, होसी सफल मुझ आस ॥ पक्ष मास गिणतां थकांजी, पूरी थई चौमास ॥ जग० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारना जी, जीरण कीधी तयार । प्रभुनो मारग देखतो जी, बैठो घरने बार ॥जग० ॥७॥ घरि आवे छे पाहुणा जी, नौत्या एकज वार । प्रभू कान पधारसी जी, मैं न्यौता वारम्वार ॥जग०॥८॥ पीछे करसूं पारणो जी, हूं प्रभूने पडिलाभ । होय मनोरथ एहवो जी, तो विन वरसे आभ ॥जग०॥९॥ अवसर ऊठ्या गोचरी जी, श्री सिद्धारथ पुत्र । वैशालापुर आवतां जी, पूरन घर पहुत्त ॥जग०॥१०॥ मिथ्यात्वी जाणे नहीं जी, जंगम तीरथ एह । चेटी से कहे एहवो जी, कांइक भिक्षा देह ॥जग०॥११॥ चाटू भरने बाकुला जी, प्रभुने आणी दीध ।

निरागी तेही लिया जी, तिहां प्रभु पारणो कीध ॥जग०॥१२॥ देव वजावे दुन्दुभी जी, जय बोले कर जोड़। हेमवृष्टि हुई तिहां जी, साढ़े बारह क्रोड़ ॥जग०॥१३॥ कहे सेठ तुमे स्यूं दियो जी, कीयो पारणो वीर। लोकां प्रते इम कहे जी, मैं वहराई खीर ॥जग०॥१४॥ राज लोक सहु ए कहे जी, धन धन पूरण सेठ। ऊंची करणी तैं करी जी, अवसर हू तुझ हेठ ॥जग०॥१५॥ जीरण सेठ सुने तवे जी, वाजित्र दुन्दुभी नाद। अनन्त कियो तिहां पारणोजी मन में थयो विषवाद ॥जग०॥१६॥ हूं जग में अभागियो जी, मोरे न आया स्वाम। कल्पवृक्ष केम पामियेजी, मारू मंडल ठाम ॥जग०॥१७॥ जेता मनोरथ मैं किया जी, तेता ही रह्या मांय। निरधन जिम जिम चिंतवे जी, तिम तिम निस्फल थाय ॥जग०॥१८॥ स्वामी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्य विहार। आया पास संतानिया जी, तिहां मुनि केवल धार ॥जग०॥१९॥ वैशालापुर राजिया जी, लोक सहु आनन्द। राय प्रश्न पूछे तिहां जी, सुगुरु चरण अरविन्द ॥जग०॥२०॥ मेरे नगर मे को अछे जी, जीव पुण्य जसवंत। कहे केवली आज तो जी, जीरण ते जसवंत ॥जग०॥२१॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरण सेठ महंत। दान दियो जिण वीरने जी पूरण ते जसवंत ॥जग०॥२२॥ राय प्रते कहे केवली जी, पूरण कीनो दान। हेम वृष्टि फल तेहने जी, अवर न कोई प्रमाण ॥जग०॥२३॥ देवलोक तिण बारमे जी, जीरण बांध्यो बंध। विना दान दीधा लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥जग०॥२४॥

घड़ी एक सुर दुंदुभी जी, जो न सुणंता कान। लहोतो जीरण तो सही जी, केवल अविचल थान ॥ जग० ॥ २५ ॥ राजा जीरण ने दियो जी, अधिक मान सम्मान, मुख्य नगर मे थापियो जी जोवो पुण्य प्रमाण ॥ जग० ॥ २६ ॥ दान दियो सुपात्र ने जी, ते निस्फल नवि जाय । पात्र दान अनुमोदना जी, जीरण जिसफल थाय, ॥ जग० ॥ २७ ॥ इम जाणी अनुमोदना जी, दान सुपात्र रसाल । दान देवे सुपात्र मे जी, तेहने नमे मुनिमाल ॥ जग० ॥ २८ ॥

श्री नाकोड़ा जी जिन स्तवन ।

अपने घर बैठा लीला करो, निज पुत्र कलत्र सुं प्रेम धरो । तुम देश देशान्तर कांई दोडो, नित्य नाम जपो श्री नाकोड़ो ॥ १ ॥ मन वंछित सगली आस फले, सर ऊपर चामर छत्र ढले। आगल चाले जल २ घोड़ो। नित० ॥ २ ॥ भूत ने प्रेत पिशाच वली, शाकण ने डाकण जाय टली। छल छिद्र ने लागे कांई कोडो ॥ नित० ॥ ३ ॥ एकान्तर ताव सियो दाऊ, औषध विन जाय थइ नाऊ। नवि दूखे माथा पग गोडो ॥ नित० ॥ ४ ॥ कंठमाला गड गुम्बड सगला, व्रण कुमर रोग टले सबला। पीडा न करे फणगण फोडो ॥ नित० ॥ ५ ॥ तूं जागतो तीरथ पास पहु, तुमें जाने सगली जगत सहु ततक्षण अशुभ करम तोडो ॥ नित० ॥ ६ ॥ श्रीपास महेवापुर नगरे, मैं भेट्या जिनवर हरष

भरे। समय सुन्दर कहे गुण जोडो ॥ नित० ॥ ७ ॥

श्री नवकार स्तवन ।

श्री नवकार जपो मन रंगे, श्रीजिनशासन साररी माई। सर्व मंगल मांहे पहलो मंगल जपतां जय जयकार री माई ॥ श्रीनव० ॥ ॥ १ ॥ पहले पद त्रिभुवन जन पूजित, प्रणमूं श्री अरिहंतरी माई। अष्ट करम वरजित बीजे पद, ध्यावो सिद्ध अनन्त री माई ॥ श्रीनव ॥ ॥ २ ॥ अचारज तीजे पद सुमरो, गुण छत्तीस निधान री माई। चौथे पद उवझाय जपीजे, सूत्र सिद्धांत सुजाण री माई ॥ श्रीनव० ॥ ३ ॥ सर्व साधु पंचम पद प्रणमूं, पंच महाव्रत धार री माई। नवपद अष्ट इहां छे सम्पद, अडसठ वरण संभार री माई ॥ श्रीनव० ॥ ४ ॥ सात यहां गुरु अक्षर एहना, एक अक्षर उच्चार री माई। सात सागर ना पातिक जाये, पद पचास विचार री माई ॥ श्रीनव० ॥ ५ ॥ संपूरण पणसे सागर ना, पाप पुलावे दूर री माई। इह मन क्षेम कुशल भव वंछित, पर भव सुख भरपूर री माई ॥ श्रीनव० ॥ ६ ॥ रतिवर सोवन पोरसी सिधो, शिवकुमार इण ध्यान री माई। सर्प छोड़ हुई फूलमाला, श्रीमति ने परधान री माई ॥ श्रीनव० ॥ ७ ॥ इति उपद्रव करतो निवार्यो, परचो इहां पर सिद्ध री माई ॥ श्रीनव० ॥ ८ चोर चंड पीगल ने हुंडक। पामे सुर नर रिद्धिरी माई ॥ श्रीनव० ॥ ८ ॥ पंच परमेष्ठी जग में उत्तम, चवदे पूरव सार री माई। गुण बोले श्री

पद्मराज जसु, महिमा अपरंपार री माई ॥ श्रीनव ० ॥ १ ॥

श्री चिन्तामणि पास स्तवन ।

आणी मनसुध आसाता, देव जुहारूँ सासता। पारसनाथ मनवंछित पूर, चिन्ता मणि म्हारी चिन्ता चूर ॥ १ ॥ अणियाली तोरीं आंखड़ी, जाने कमल तणी पांखड़ी । सुखदीखे दुख जावे दूर ॥ चिन्ता ॥ २ ॥ दूजे तो को केहने नमे, माहरे मन में तुंहिज रमे । सदा जुहारूँ उगंते सूर ॥ चिन्ता० ॥ ३ ॥ मुज मन लागी तुम सूं प्रीत. दूजो कोई न आवे चित्त । कर मुझ तेज प्रताप पंडूर ॥ चिन्ता० ॥ ४ ॥ बीछड़िया वालेसर मिला, वेरी दुश्मन पाछा ठिला । तूंछे माहरे हाजरो हजूर ॥ चिन्ता ॥ ५ ॥ एह स्तोत्र मनमें जेधरे, तेहना चिन्त्या कारज सरे आधि व्याधि दुख जावे दूर ॥ चिंता० ॥ ६ ॥ भव भव होज्यो तुम पाय सेवा, श्री चिन्तामणि अरिहंत देव। समय सुन्दर कहे सुख भरपूर ॥ चिंता० ॥ ७ ॥

श्री गौतमाष्टक ।

प्रह उठी गौतम प्रणमीजे, मन वंछित फल नो दातार । लब्धि निधान सकल गुण सागर, श्रीवर्धमान प्रथम गणधार ॥ प्रह० ॥ १ ॥ गोतम गोत्र चवद विद्यानिधि, पृथिवी मात पिता वसुभूत । जिनवर वाणी सुणी मन हरख्यो, बोलाव्यो नामे इन्द्रभूत ॥ प्रह० ॥ २ ॥ पंच

महाव्रत लही प्रभू पासे, ये त्रिपदी जिनवर मनरंग। श्री गौतम गण-धर तिहां गूंथ्यां, पूरव चवद दुवालस अंग ॥ प्रह० ॥ ३ ॥ लवधे अष्टापद गिरी चढ़िया, चैत्य वन्दन जिनवर चौवीस। पनरे से तीहोतर तापस, प्रतिबोधी कीधा निज सीस ॥ प्रह० ॥ ४ ॥ अद्भुत एह सद्गुरुनो अतिशय, जसु दिखे तसु केवल ज्ञान। जावजीव छठ २ तप पारणो, आपण गोचरी पै यमध्यान ॥ प्रह ॥ ५ ॥ कामधेनु सुर तरु चिंतामणी, नाम माँहे सज करेरे निवास। ते सद्गुरु नो ध्यान धरंता, लाभे लक्ष्मी लील विलास ॥ प्रह ॥ ६ ॥ लाभवणोविणजे व्यापारे, आवे प्रवहण कुशले क्षेम श्री सद्गुरु नो नाम जपंतां धामे पुत्र कलत्र बहु प्रेम ॥ प्रह० ॥ ७ ॥ गोतम स्वामी तणा गुण गाता, अष्ट महासिद्धि नवे रे निधान। ससय सुन्दर कहै सुगुरु प्रसादे। पुन्य उदय प्रगट्यो परधान ॥ प्रह ॥ ८ ॥

श्री गोतम स्वामी छन्द ।

वीर जिनसर केरो सीस, गौतम नाम जपो निस दीस। जो कीजे गौतम नो ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गयवर चढ़े, मनवछित लीला संपजे। गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संयोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुवा वांकड़ा, तस नामे नावे ढूकड़ा। भूत प्रेत नवि मंडे पाण, ते गौतमना करूँ वखान ॥ ३ ॥ गौतम नामे निरमल काय, गौतम नामे वाधे आय। गौतम जिन

शासन सिणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ साल दाल सुहरा घृत गोल मनवंछित कापड़ तंबोल । घरे सुधरणी निरमल चित्त, गोतम नामे पूत विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जगभाण । मोह माया मन्दिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ वर गय गल घोड़ा नी जोड़, वारु पहुँचे वांछित कोड । महिल माने मोटा राय, जो तूठे गौतम ना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नर नी संगति मले । गौतम नामे निरमल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवन्त अवधारो सहु, गुरु गौतम ना गुण छे बहु । कहे लावन्य समय कर जोड़, गौतम तूठे सम्पत कोड़ ॥ ९ ॥

श्री कुशल सूरिजी स्तवन ।

सद्गुरु पूजण जवस्यां, म्हे तो कुशल सुरिन्द गुण गास्या हे माय। श्रीफल भेट चड़ावस्यां, मैं तो चरण री पूज रचास्यां हे माय ॥ सद० ॥ ॥ १ ॥ मरु देश मे शोभत एतो नगर बिकाणे छाजे हे माय । गाम गाडाले दीपतां, ज्यारी महियल महिमा गाजे हे माय ॥ सद० ॥ २ ॥ समरयां संकट चूरता, ए तो कुशल करण अवतारी हे माय । सुख दायक श्री संघ ने एतो खरतरगच्छ अधिकारी हे माय ॥ सद० ॥ ३ ॥ दूर देशान्तर थी घणा, एतो हिल मिल यात्री आवे हे माय । लुलि २ शीस नमावतां । एतो संत सुयश मिलगावे हे माय ॥ सद०

॥ ४ ॥ सज सिणगार मनोहरु, एतो गौरी मंगल गावे हे माय।
तनमन प्राण लोभावती, एतो सन्त सुयश मिल गावे हे माय ॥ सद० ॥
॥ ५ ॥ विछुड्यां साजन मेलवे, एतो अनमी पाय नामाये हे माय।
मन रो मनोरथ पूरवे, परघर लखमी लावे हे माय ॥ सद० ॥ ६ ॥
विषमी वेला वाट मे, एतो समर्‌यां सानिध आवे हे माय। भूखां
भोजन मेलवे, एतो तिसियां नीर पिलावे हे माय ॥ सद० ॥ ७ ॥
यात्री आवे नितनवा, एतो थान आगल थिर थाटे हे माय। सीरणीया
नित सामठी, एतो गावे गुण गहगाटे हे माय ॥ सद० ॥ ८ ॥ कुशल
सूरिन्द गुरु आगले, एतो भविमिल भावना भावे हे माय। चन्द फते
मुनि नित नमे एतो परमानन्द सुख पावे हे माय ॥ सद० ॥ ६ ॥

श्री दादा गुरु गुण-इकतीसा

— दोहा —

श्री गुरु देव दयाल को, मन में ध्यान लगाय,
अष्ट सिद्धि नवनिद्धि मिले, मनवांछित फल पाय।

— चोपाई —

श्री गुरु चरण शरण में आयो, देख दरस मन अति सुख पायो।
दत्त नाम सुख भंजन हारा, विजली पात्र तले धरनारा ॥ १ ॥ उपशम
रसका कन्द कहावे; जो सुमरे फल निश्चय पावे। दत्त सम्मति दातार

दयालु, निज भक्तनके हैं प्रतिपालु ॥ २ ॥ बावन वीर किये वश भारी. तुम साहिब जग में जयकारी । जोगणी चौसठ वशकर लीनी, विद्या-पोथी परगट कीनी ॥ ३ ॥ पांच पीर साधें बलकारी, पच नदी पंजाब मझारि । अन्धों की आंखें तुम खोली, गुंगों को दे दीनी बोली ॥ ४ ॥ गुरु वल्लभ के पाट बिराजो, सूरिन में सूरज सम राजो । जग में नाम तुम्हारो कहिए, परतिज सुर तरु सम सुख लहिये ॥ ५ ॥ इप्ट देव मेरे गुरु देवा, गुणी जन मुनि-जन करते सेवा तुम सम और देव नहीं कोई जो मेरे हितकारक होई ॥ ६ ॥ तुम हो सुरतरु वञ्छित दाता, मैं निसदिन तुमरे गुण गाता । पार ब्रह्म गुरु हो परमेश्वर, अलख निरंजन तुम जगदीश्वर ॥ ७ ॥ तुम गुरु नाम सदा सुख दाता, जपत पाप कोटी कट जाता । कृपा तुम्हारी जिन पर होई, दुःख कष्ट नहीं पावे सोई ॥८॥ अभयदान दाता सुखकारी, परमात्म पुरण ब्रह्मचारी । महा शक्ति बल-बुद्धि-विधाता, मैं गुरु नित उठ तुम्हें मनाता ॥ ९ ॥ तुम्हरी महीमा है अतिभारी, टूटी नाव नई कर डारी । देश देश में थम्भ तुम्हरा, सब सकल के हो रखवाला ॥ १० ॥ सर्व सिद्धि निधि मंगल दाता. देव परि सब सीस नमाता । सोमवार पूनम सुखकारी, गुरु दर्शन पावे नरनारी ॥ ११ ॥ गुरु छलने को किया विचारा, श्राविका रूप जोगणी धारा । कीली उज्जयनी मझधारा, गुरु गुण अगणित किया विचारा ॥१२॥ हो प्रसन्न दीने वरदाना, सात

जो पसरे मही दरम्याना । युग प्रधान जय जन हितकारा अंबड मान चुर्ण कर डारा ॥ १३ ॥ मात अम्बिका प्रकट भवानी, मन्त्र कला धारी गुरु ज्ञानी । अमावस को चांद उगायो, देख अचम्भो सब को आयो ॥ १४ ॥ मणिधारी जिनचन्द कहावे, जांकी मुनिजर मुझ मन चावे । अकबर को अभक्ष्य छुड़ाया, मुगल-पूत को तुरत जिलाया ॥ १५ ॥ पूजे दील्ही मे जो ध्यावे, संकट नहीं सुपने में आवे । ऐसे दादा साहब मेरे, हम चाकर चरणन के चेरे ॥ १६ ॥ निशदिन भैरू गोरे काले, हाजिर हुकम खडे रखवाले । कुशल करण लीनो अवतारा, सदगुरु मेरे सानिधकारा ॥ १७ ॥ डूबती जहाज भक्त की तारी, पंखी रूप धर्यो हितकारी । सब अचम्भा मन में लावे, गुरु तब शुभ व्याख्यान सुनावे ॥१८॥ गुरु वाणी सुन सब हरखाये, गुरु भवतारण तरण कहाये । समय सुन्दर की पच नदी मे, फट गई जहाज नई की छिन मे ॥ १६ ॥ अब है सद गुरु मेरी वारी, मुझ पतित न ओर भिखारी । श्री जिनचन्द सूरी महाराजा, चौरासी गच्छ के सिरताजा ॥ २० ॥ शास्त्र सिद्धान्त महोदधि सारे, जङ्गम युग प्रधान जयकारे । भट्टारक पद नाम धरावे, जय जय जय जय गुणिजन गावे ॥ २१ ॥ फरक सहित गुरु अंक बतावे, भुखा भोजन आन खिलावें । प्यासे भक्त को नीर पिलावें, जलधर उणी ला लेआवे ॥२२॥ अमृत जैसा जल वरसांवे कभी काल नहीं पड़ने पावे । अन धन से

भरपुर वनावे, पुत्र पौत्र बहु सम्पति पावे ॥ २३ ॥ चामर-युगल ढुले सुखकारी, छत्र कीरणीया सोभा भारी । राजा राणा सीस नमावे, देव परी सब ही गुण गावे ॥ २४ ॥ पूरव पच्छिम दक्षिण तांई, उत्तर सर्व दिशा के मांही । जोत जागती सदा तुम्हारी, कल्प-तरु सदगुरु गणधारी ॥ २५ ॥ विजयइन्द्र सूरी सूरीश्वर राजे, छड़ीदार सेवक संग साजे । जो यह गुरु इकतीसा गावे, सुन्दर लक्ष्मी लीला पावे ॥ २६ ॥ जो यह पाठ करे चितलाई, सदगुरु उनके सदा सहाई । वार एक सो आठ जो गावे, राज-दण्ड बन्धन कट जावे ॥ २७ ॥ संवत् आठ दोय हजारा, आसो तेरस शुक्करवारा । शुभ मुहरत वुर सिंह लगन में, पूरण कीनो वैठ मगन में ॥ २८ ॥

(दोहा)

सद्गुरु का समरण करे, धरे सदा जो ध्यान ।
प्रात उठी पसिले पढ़े, होय कोटि कल्याण । २९ ।
सुनो रतन चितामणि, सद्गुरु देव महान् ।
वन्दन श्री गोपाल का लीजे विनय विधान । ३० ।
चरण शरण में मैं रहूं-रखियो मेरा ध्यान ।
भूल चूक माफी करो- हे मेरे भगवान । ३१ ।

॥ इति ॥



॥ अथ श्री शांतिनाथजी नो छन्द ॥

(वीर जिनेसर केरो शिष्य- ए देशी)

शांतिनाथ को कीजे जाप, क्रोड भवोना काटे पाप ॥ शांतिनाथजी म्होटा देव, सुरनर सारे जेहनी सेव ॥ १ ॥ दुःख दारिद्र जावे दूर, सुख सपति होवे भरपूर ॥ ठग फांसी गर जावे भाग, बलती होवे शीतल आग ॥ २ ॥ राज लोक मां कीर्ति घणी, शांतिजिनेश्वर माथे धणी । जो ध्यावे प्रभुजी नु ध्यान, राजा देव अधिकुं मन ॥ ३ ॥ गड गुंबड़ पीड़ा मिट जाय, देखी दुश्मन लागे पाय । चलो भाग्यो मननो भर्म, पाम्यों समकित काट्यां कर्म ॥ ४ ॥ सुणो प्रभु मोरी अरदाश, हूं सेवक तमे पूरो आश । मुझ मन चिंतित कारज करो, चिन्ता आरति विघ्नज हरो ॥ ५ ॥ मेटो म्हारां आल जंजाल प्रभु मुझने तु नयण निहाल । अपनी कीर्ति ठामो ठाम, सुधारो प्रभु म्हारा काम ॥ ६ ॥ जो नित्य नित्य प्रभुजी ने रटे, मोती बंधा फूला कटे । चेपलावण दोनों जल जाय, विण औषध कटजावे छाय ॥ ७ ॥ शांतिनाथ ना नाम थी थाय, आंखे टूट पडल कट जाय । कमलो पीलो जल जल झरे, शांति जिनेश्वर शांति करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याधि मिटावे रोग, सज्जन मिलनों मले संयोग । एहवो देव न दीसे और, नहीं चाले दुश्मन को जोर ॥ १० ॥ लुटारा सब जावे नास, दुर्जन फीटी होवे दास । शांतिनाथ नी कीर्ति गणी, कृपा करो तमे

त्रिभुवन धणी ॥ १० ॥ अरज करूं छुं जोड़ी हाथ, आप सूं नहीं कोई छानी बात। देख रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारां पाप ॥ ११ ॥ मुज मन चिन्तित करियो काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज। तुम सम जग मांहि नहीं कोय तुम भजवाथी शाता होय ॥ १२ ॥ तुम पास चले नहीं मर को रोग, ताव तेज रो नांखे तोड़, मारि मिटाई कीधी प्रभु संत, तुज गुणनो नही आवे अन्त ॥ १३ ॥ तुमने सम रे साधु सती, तुमने सम रे जोगी जती। काटो संकट राखो मान, अविचल पदनु आयो थान ॥ १४ ॥ संवत अठारह चोराणु जाण, देश मालवो अधिक वखाण। शेहरे जावरा चैतरे मास, हुँ प्रभु तुम चरणों का दास ॥ १५ ॥ ऋषि रूगनाथ जी कीधो छन्द, काटो प्रभुजी म्हारा फन्द। हूं जोऊं प्रभुजी नी वाट, मुझ आरति चिंता सबि काट ॥ १६ ॥ इति।

॥ वन्दे वीरम ॥

वीर जिनंद वांदिने, गौतम गोचरिये सिधाया। इम पोलास पुर नगरी में, गौतम घर घर आंगण फिरिया, आगा एम पधारो पूज, हम घर वहरण वरिया ॥ १ ॥ इण अवसर एमेतो, रमतो मन, गमता मुनि दिठा। कंचन वर्णि काया जाणी. मनमें लागे मिठा ॥ आ० ॥ २ ॥ बोले कुमर अमृत वाणी, एक करो अभिरामी। खरे दुपहारा पाया उमराणा, ममता किणदिक कामी, आ० ॥ ३ ॥

सांभल कुमर राज सौभागी, सुद्ध गवेशणा किजे, निदपणा ने अति चारी। भावे भिचा लीजे, आ० ॥ ४ ॥ चालोनि हमारे मन्दिर, जे केसोते करसां। जे जोइए जुगत करीने, भावे भिक्षा देसॉ। आ० ॥ ५ ॥ इम कही घरते डेलाया, आया मन आनन्दे। एमन्ति रान देखीना, विधि सुं गौतम वन्दे। आ० ॥ ६ ॥ आज हमारे रत्न चिन्तामणि मेह अमीरस वुठा कही मारे आंगण, सुर तरु फलिया। कहीं गौतम जिन दिठा। आ० ॥ ७ ॥ रे वालुरा बहु गण वंता, गौतम गण-धर आया। थाल भरीने मोटा मोदक, भावे सुं वहराया। आ० ॥ ८ ॥ कुमरक हे प्रभु भार आपो, भार घणो तुम पासे। गौतम कहे हूं तेहने आपु, चारित्र ले उल्लासे। आ० ॥ ९ ॥ हूं चारित्र लेसु तुम पासे भार देवो मुझ हाथे। गौतम पूछे कह नया मोकला या साथे। ॥ १० ॥ वन्दे कुमर पाया, मुनिवरना हाथ धरायो माथे। भोलावो दिन्नो माताजी, इत कही चाल्या साथे। आ० ॥ ११ ॥ श्री गौतम गुरु ज्ञानी जाने, दीक्षा दीधी तेने। वर्द्धमान भोलावो दीनो, मार्ग दीनी एहने। आ० ॥ १२ ॥ तीन सध्याय एमन्तो चाल्यो, साधु संगाते वनमें नानो सरोवर नीर भरी- देखी हरख्यो मनमें आ० ॥ १३ ॥ नानो सरोवर नालो भाजन, नाव करे एमन्तो साधु जी वलता देखोनी। वालक रमणी करतो। आ० ॥१४॥ रे वालुरा वहु गुण वन्ता। ए अपराध न कीजे, छ छ छकायना जीव हणाता, दुर्गति ना फल लीने। आ० ॥ १५ ॥ लाज घणी तिहॉ मनमें आई। समवसरण मे आया, इरिया वही पडिक्कमतां, शुक्ला ध्यान

मन ध्याया । आ० ॥ १६ ॥ केवल ज्ञान तिहां उपजायो, धन मुनि एमन्ता । शुद्ध मन चारित्र पाली । ते मुनि मुक्ति पोहता । आ० ॥ १७ ॥ गौतम आज एमन्ता सरिखा । गुणवन्ता ऋषि राया, लक्ष्मी रत्न कर जोड़ी ने, वन्दे मुनिना पाया । आ० ॥ १८ ॥

[इति]

अथ सिद्ध भगवान नु स्तवन

हमीरीयानी (अथवा) समवाजिन अवधरीये— ए देशी

श्री गौतम पृच्छा करे, विनय करी शीश नमाय ॥ प्रभुजी ॥ अविचल स्थानक में सुण्यु, कृपा करी मोय बताय ॥ प्रभुजी ॥ शिव-पुर नगर सोहामणु ॥ १ ॥ (ए आंकणी) ॥ आठ कर्म अलगांकरी सार्या आतम काम हो ॥ प्र० ॥ छूट्या संसारना दुःख थकी, तेणे रहेवानु किहां ठाम हो ॥ प्र० ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे ऊर्ध्व लोकमां सिद्ध शिलातणु ठाम हो गौतम ॥ स्वर्ग छव्वीशनी ऊपरे, तेहनां बारे नाम हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ३ ॥ लाख पिस्तालीश जोजना लांबी पोहली जाण हो ॥ गौ० ॥ आठ जोजन जाडी बिच्चे, छेड़े मक्खी पंख ज्यु जाण हो ॥ गौ० ॥ शि० । ४ ॥ उज्जवल हार मोतीतणो, गोदुग्धशंख वखाण हो ॥ गौ० ॥ ते थकी ऊजली अति घणी, उलट छत्र संठाण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ५ ॥ अर्जुन स्वर्णसम दीपती, गठारी मठारी जाण सो ॥ गौ० ॥ फिटक रत्न थकी निर्मली, सुहाली अत्यन्त वखाण हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ६ ॥ सिद्ध शिला ओलंघी गया,

अधर रह्या सिद्ध राज हो ॥ गौ० ॥ अलोक शु'जांई अड्या, सार्या आतम काज हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ७ ॥ जन्म नहीं मरण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो ॥ गौ० ॥ वैरी नहीं मित्रज नहीं, नहीं संजोग विजोग हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ८ ॥ भूख नहीं तिरषा नहीं, नहीं हर्ष नहीं सोग हो ॥ गौ० ॥ कर्म नहीं काया नहीं, नहीं विषयारसयोग हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ६ ॥ शब्द रूप रस गंध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो ॥ गौ० ॥ बोले नही चाले नहीं मौन पणु' नहीं खेद हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १० ॥ गाम नगर तिहां कोई नहीं, नहीं वसती न उजाड़ हो ॥ गौ० ॥ काल सुकाल वर्ते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो ॥ गौ० ॥ मुक्तिमाँ गुरू चेला नहीं, नहीं लघु वड़ाई तास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १२ ॥ अनन्ता सुखतां झीली रह्या, अरूपी ज्योति प्रकाश हो ॥ गौ० ॥ सहु कोईने सुख सारीखां, सवला नें अविचिल वास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १३ ॥ अनन्त सिद्ध मुगतें गया वली अनंत जाय हो ॥ गौ० ॥ अवरजग्या रू'धे नहीं, ज्योति मां ज्योति समाय हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १४ ॥ केवल ज्ञान सहित छे, केवल दर्शन खास हो ॥ गौ० ॥ क्षायक समकित दीपन्तु, कदीयन होवे उदास हो ॥ गौ० ॥ शि० ॥ १५ ॥ सिद्ध स्वरूप जे ओ लखे, अणीमन वैराग्य हो ॥ गौ० ॥ शिवसुन्दरी वेंगेवरे, नय कहे सुख अथाग हो ॥ गौतम ॥ शिव० ॥ १६ ॥

इति ।

॥ सरस्वती का स्तोत्र ॥

मा भगवती विद्यानि दे नारी, माता सरस्वती, तु वाणी विलासनी देनारी, अज्ञान तीमीरणी हरनारी. तु ज्ञान विकासनी करनारी ॥ मा० ॥ १ ॥ तु ब्रह्माणी जगमाता आदि भवानी तु त्राता काश्मीर मडनी सुख दाता ॥ मा० ॥ २ ॥ माने मस्तके मुकट विराजे खे दोय काने कुंडल छाजे छे हिये हार मोतीनों राजे छे ॥ मा० ॥ ३ ॥ एक हाथ वीणा सोहे छे वीजे पुस्तक पढी बोहे छे, कमलाकर माला मोहे छे ॥ मा० ॥ ४ ॥ हंस आसन वेसी जगत फिरे, कवि जननां मुख मां संचरे मा मुजने बुद्धि प्रकाश करे, ॥ मा० ॥ ५ ॥ सचराचर मां तु हर्वामितुज ध्यान धरे चीत उलसीने विद्या पामे हसि हसि ॥ मा० ॥ ६ ॥ क्षुद्रोपद्रव हर नारी कहे, दयानदने सुखकारी शासनदेवी मनोहरी हुं जावूं बलीहारी ॥ मा० ॥ ७ ॥

॥ श्री मणिभद्रजी का छन्द ॥

(श्री शिवकीर्ति मुनि विरचित)

श्री माणिभद्र सदा समरो, उर बीच ध्यान अखड धरो ॥ जपिया जय जयकार करो, भजीया सहु नित्य भंडार भरो ॥ १॥ जे कुशल करे नामज लिया, आनन्द करे देव आश कीयां ॥ सोभाग्य वधे जग सहस्स गुणो दिल से ध्योदे प्रभु जश गणो॥२॥ अरियण सहु अलगा भागे, विरूआवेरी जन पाय लगे। संकट शोक वियोग हरे, उंणवेला आय सहाय करे ॥ ३ ॥ भूत भयंकर सहु भागे, जक्ष योगणो सायणी नवि लागे ॥ वाय चोरासी जोय अलगी, लखमी सहु आप मले वेगी ॥ ४

॥ गुल पापड़ियां गुरुवार दिने, तापसिया लाडू शुद्ध मने ॥ धूप दीप नेवेद्य धरो, आठम दिन पुजा अयश्य करो ॥ ५ ॥ जेहने दिन प्राते जाप सदा, तस सुपनांतर में प्रत्यत्त कदा ॥ जपयाँ सहु जाये आपदा कोउ मणा घरे रहे न कदा ॥ ६ ॥ मुहमद सारू तमें जस करयो, गुण सायर लिस्यो तमे गुण भरयो ॥ श्री दीननाथ जी दया करो, शिर उपर हाथ दियो सखरो ॥ ७ ॥ भवियण जे भावे मनशे, कारज सिद्धो आपणी करशे ॥ पूज्यां पुत्र वधे दुगुणा किणी वाते कदि रहे न उणा ॥ ८ ॥ श्री मणिभद्र मनमें ध्यावो, सुख संपत्ति बहु वेगो पावो ॥ लक्ष्मी कीर्ति वर आप लहे, शिव कीर्ति मुनि एम सुजस कहे ॥ ९ ॥

[इति समाप्तम्]

कवित्त

उपम कनक देव, उपमन काहू तेव,
चुल्ल हेम तेज जेम, जोती मोती नीरकी ।
लंछन हजार आठ, कर्म दल दोना काट,
जोजन गमन रूप, वाणी एक वीर की ॥ १ ॥
पत्थर फटिक मांहि, ताउ पै विराजमान,
वचन प्रकाशे प्रभु, घूंट जैसी खीर की ।
तरण तारण देव, सुरपति सारे सेव,
ऐसी महिमा लोक में, विराजे महावीर की ॥ २ ॥
चौवीसमो महावीर, शूरवीर महावीर,
वाणी मीठी दूध खीर, सिद्धारथ नन्द है ।

नाग जैसी नार जाणे, घट में वैराग आणे।

जोग लियो जग मांहि, छोडा मोह फन्द है ॥ ३ ॥

चौदह हजार सन्त, तार दिया भगवन्त,

करमों का किया अन्त, पाम्या सुख कुन्द है।

भणे "मुनि चन्द्र भाण" सुणो भविक ? गण,

महावीर कियाँ ध्यान, उपजे आनन्द है ॥ ४ ॥

[समाप्त]

स्तुति

ब्राह्मी चन्दन बालीका, भगवती राजीमती, द्रौपदी कौसल्या च मृगावती, च सुलसा सीता सुभद्रा शिवा, कुन्ति शीलवती नलस्य दुहिता, चुला प्रभावत्यपि पद्मावत्यपि सुन्दरी, दीन प्रते कुर्वन्तु वो मांगलम् ॥ १ ॥ इति।

गौतम स्वामी का छन्द

प्रह उठी नित प्रणमिये गुणवन्ता, गौतम गणधार वर गुर्वर नामे, भलो गांव, सोहे देश मगध मझार द्विज वसुभूति ने धरे तिहां लिनो उतम अवतार ॥ १ ॥ पृथ्वी माता जन्म था तनु सोहे, सुन्दर सुकुमार, गौतम गोत्र विराजता नाम थाप्यो इन्द्र भूति उदार ॥ २ ॥ सोवन वरण सुहावणो तनु उचोकर सात निहाल, श्री महावीर जिणंद के पटधारी पहला गणधार ॥ ३ ॥ वाजुवरष को आउखो प्रभु पहुँता

मुक्ति मझार, नाम लिये सुख संपजे दुःख जावे दोहग दूर पुलाय ॥ ४॥ पदसेवा गुरु राय की पुण्य योगे पाये नर नार साधु क्षमा कल्याण की नित हो जो वन्दना वारम्वार ॥ ५ ॥

[इति समाप्तम्]

श्रीमान देवसूरि कृत लघुशान्ति स्तव

शान्ति शान्ति निशान्तं, शान्तं शान्ताऽशिवं नमस्कृत्य। स्तोतुः शान्ति निमित्त, मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ श्रोमिति निश्चित-वचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्। शान्ति, जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, सम्पत्ति समन्विताय शस्याय। त्रैलोक्य पूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामर सुसमूह, स्वामिक संपूजिताय निजिताय। भुवन जन पालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्व दुरितौघ नाशन कराय सर्वाऽशिव प्रशमनाय। दुष्ट ग्रह भूत पिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मन्त्र, प्रधान वाक्योपयोग कृततोपा। विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत त शान्तिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति! विजये। सुजये! परापरैरजिते! अपराजिते। जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याण मङ्गलं प्रददे। साधूनां च सदाशिव, सुतुष्ठि पुष्टि प्रदेजीयाः ॥ ८ ॥ भव्वाना कृतसिद्धे! निर्वृत्ति निर्वाण जननि! सत्वानाम। अभयप्रदान

निरते ! नमोऽस्तु स्वस्ति प्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिन शासन निरताना, शान्ति नतानां च, जगति जनतानाम् श्री सम्पत् कीर्तियशो वर्द्धनि जयदेवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विष विषधर, दुष्ट ग्रह राज रोग रण भयतः । राक्षस रिपुगण मारि चौरेति श्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिव, कुरु कुरु शांति च कुरु कुरु सदेति । तुष्टि कुरु कुरु पुष्टि कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरुत्वम् ॥ १२ ॥ भगवति ! गुणवति ! शिव शान्ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरू जनानाम । ओमिति नमो नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर पुररसरं, संस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्ति नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि-दर्शित, मन्त्रपदविदर्भितः स्तवः शान्तेः । सलिलादि भय विनाशी, शान्त्यादि करश्च भक्तिमातम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथा योगम् । स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमान-देवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥

सर्व मङ्गल माङ्गल्यं सर्व कल्याणकारणम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१९॥

वृद्ध णमोकार स्तोत्र

किं कप्पतरु रे अयाण, चिंतउ मणभितरि । किं चिंतामणि कामधेनु, आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे, देसान्तर लंघउ । रयणरासि कारण किसे, सायर उल्लंउ ॥ १ ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धउ ए णवकार । सयल काज महियल सरे, दुत्तर तरे संसार ॥ केवलि भासिय रीत जिके, नवकार आराहे । भोगवि सुक्ख अणंत, अन्त परम पय साहे ॥ २ ॥ इण झाणे सुर ऋद्धि पुत्त, सुह विलसे बहु परि । इण झाणे सुरलोक इन्द, पद पामे सुन्दरी ॥ एह मंत्र सासतो जपे, अचिंत चिंतामणि एह । समरण पाप सवे टले, ऋद्धि सिद्धि णियगेह ॥ ३ ॥ णिय सिर ऊपर झाण, मज्झ चिंतवे कमल नर । कंचणमय अठदल सहित, तिहां मांहे कनक्वर ॥ तिहां बैठा अरिहत देव, पउमासण फिटकमणि । सेय वत्थ पहरेव पउम पय चिंते णियमणि ॥ ४ ॥ णिव्वारय चउ गई गमण, पामिय सासय सुक्ख । अरिहंत झाणे तुम लहो, जिम अजरामर मुक्ख । पनर भेय तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे । राते विद्रुम वणणिय सोहग साहे ॥ ५ ॥ राती धोवत पहर जपें, सिद्धहिं पुव्वे दिसि । सयल लोय तिह नर ही होइ ततखिण सँवसि ॥ मूल मंत्र वसीकरण, अवर सहू जगधंध । मणमूली ओषध करे बुद्धिहीण जाचंध ॥ ६ ॥ दक्खिण दिसि पखड़ी जपे नमो आयरिआणं । सोवणवण्णहं ॥ सीससहित उवए सहिणाणं ॥ ऋद्ध सिद्ध कारणे लाभ,

ऊपर जे ध्यावे । पहरे पीलावत्थ तेह, मण वंछिय पावे ॥ ७ ॥ इण झाणे णवणिधि हुवे, ए रोग कदे णवि होय। गय रह हय वर पालखी, चामर छत्त सिर जोय ॥ णीलवण्ण उवझाव, सीस पाढता पच्छिम । आराहिज्जे अङ्ग पुव्व धारन्त मणोरम ॥ ८ ॥ पच्छिम दिस पंखडीय कमल ऊपर सुहझाण । जोवो फरमाणंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्खे विदुर, तिहां नर वहु फल होई । मन सूधे विण जे जपे, तिहां फल सिद्ध ण जोई ॥ ६ ॥ सव्व साधु उत्तर विभाग सामला बइठा । जिण धर्म लोय पयासयंत चारित्र गुण जिट्ठा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके झाणे । पंचवण्ण तिहां णाण झाण गुण एह पमाणे ॥ १० ॥ अनन्त चौवीस जग हुए होसी अवर अणंत । आदि कोइ जाणी नही, इण णवकारह मंत ॥ एसो पंच णमुक्कारो, पद दिसिअ गणेहिं । सव्व पावप्पणासणो, पद जपणेरेहिं ॥ ११ ॥ वायव दिसि झाएह, मंगलाणं च सव्वेसिं । पढम हवई मंगलं ईसाण पएसि ॥ चिहुँ दिसि विदिसे मिलिय, अठ दल अमल ठवेइ । जो गुरु लघु जाणी जपे, सो घण पाव खवेइ ॥ १२ ॥ इण प्रभाव धरणिंद हुओ, पायालह सामी । समली कुमर उपण्ण भिल्ल, सुर लोयह गामी ॥ संवल कंवल वे वलद पहुतां देवा कप्पे । सूली दीधो चोर देव थयो णवकारहि जप्पे ॥ १३ ॥ शिवकुमार मण वंछिय करे, जोगी लियो मसाण । सोणापुरसो सीधलो, इण णवकार पमाण ॥ छीके बैठा

चोर एक आकासेगामी। अहि फिट्टि हुई फूल माल णवकारह णामी ॥ १४ ॥ वाछरुआ चारंत वाल, जल नदी प्रवाहे। वीध्यों कंटहि उयर मन्त्र, जपियो मन माहे ॥ चिंत्या काज सवे सरे, ईरत परत विमास। पालित सूरितणी परे, विद्या सिद्ध आकास ॥ १५ ॥ चोर धाड़ संकट टले, राजा वसि होवे। तित्थंकर सो होइ, लाख गुण विधिसूं जोवे ॥ साइण डाइण भूत प्रेत, वेताल न पोहवे। आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते, किमहि न होवे ॥ १६ ॥ कुट्ठ जलोदर रोग सवें नासे एणही मंत। मयणासुन्दरितणी परे णव पय भाण करंत ॥ एक जीह इण मन्त्रतणा, गुण किता वखाणूं। णाणहीण छउमत्थ एह, गुण पार न जाणूं ॥ १७ ॥ जिम सन्तुजय तित्थराय, महिमा उद्वतो। सयल मंत्र धुरि एह मन्त्र राजा जयवन्तो ॥ तित्थंकर गणहर पणिय, चवदह पूरव सार। इण गुण अनन्त को कहे, गुण गिरुवो णमोक्कार ॥ १८ ॥ अडसंपय नव पय सहित, इगसठ लहु अक्खर। गुरु अक्खर सत्तेव, इह जाणो परमक्खर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि भणे, सिव सुक्खह कारण। णरय तिरय गय रोग सोग, वहु दुक्ख णिवारण ॥ १९ ॥ जल थल महियल वणगहण, समरण हुए इक चित्त। पंच परमेष्ठि मंत्रह तणी, सेवा दीजो नित्त ॥ २० ॥



श्री गौतम स्वामीजी का रास

वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कय वासो। पणमवि पभणिसु सामिसाल, गोयम गुरु रासो॥ मण तणु वयण एकन्त करिवि, निसुणहु भो भविया। जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया॥ १॥ जम्बूदीव सिरि भरह खित्त, खोणी तल मण्डण। मगह देस सेणिय नरेश, रिउ दल बल खण्डण। धणवर गुब्वर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा। विप्प वसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा॥ २॥ ताण पुत सिरि इन्द भूइ, भूवलय पसिद्धो। चउदह विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर। सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रम्भावर॥ ३॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज्जल पाडिय। तेजहि तारा चन्द सूरि आकाश भमाडिय॥ रूवहि मयण अनङ्ग करवि, मेल्यो निरधाडिय। धीरम मेरु गम्भीर सिन्धु, चंगम चय चाडिय॥ ४॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय। एकाकी किल भित्त इत्थ गुण मेल्या सिंचिय॥ अहवा निच्चय पुब्व जम्म जिणवर इण अंचिय, रम्भा पउमा गउरि गङ्ग तिहां विधि वंचिय॥ ५॥ नल बुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल रहियो। पंच सयां गुण पात्र छात्र हीडे परवरियो॥ करय निरन्तर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरम नाण दंसणह विसोहिय॥ ६ वस्तु॥ जम्बूदीव

जम्बूदीव भरह वासम्मि, खोणीतल मण्डण। मगह देस सेणिय नरेस वर गुव्वर गाम तिहां ॥ विप्र वसे वसु भूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा। सयल गुण गण रूव निहान, ताण पुत्त विज्जानिलो गोयम अतिहि सुजान ॥ ६ भास ॥ चरम जिनेसर केवलनाणी, चौविह सघ पइट्ठा जाणी। पावापुर सामी सम्पत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिथ्या मत छीजे। त्रिभुवन गुरु सिंहासन वैठा, ततखिण मोह दिगन्त पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध, मान, माया, मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा। देव दुन्दुभि आगासे वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा। चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रस भर वर वर सन्ता, जो जन वाणि वखाण करन्ता। जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कन्त समोहिय जल हल कन्ता, गयण विमाणहि रणरण कन्ता। पेखवि इन्द्र भूइ मन चिन्ते, सुर आवे अम यज्ञ हुवन्ते ॥ १३ ॥ तीर तरण्डक जिम ते वहिता समवसरण पुहता गह गहिता। तो अभिमाने गोयम जंपे, इण अवसर कोपे तणु कम्पे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्यू बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले। मो आगल कोई जाण भणीजे, मेरु अवर किम उपमा दीजे ॥ १५ वस्तु ॥ वीर जीनवर वीर जीनवर नाण सम्पन्न पावापुर सुरमहीय, पत्त नाह संसार तारण, तिहीं देवइ निम्मविय 'समवसरण

बहु सुक्ख कारण । जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिनकार । सिंहासण सामी ठव्यो हुओ ते जय जयकार ॥ १६ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्दभूइ भूयदेव तो । हुंकारो कर संचरिय कवणसु जिनवर देव तो ॥ जोजन भूमि समवसरण, पेखवि प्रथमारंभ तो । दह दिस देखे विबुध वधू, आवती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दण्ड ध्वज, कोशीशे नवघाट तो । वइर विवर्जित जतुगण, प्राती हारज आठ तो ॥ सुरनर किन्नर असुरवर, इन्द्र इन्द्राणी राय तो । चित्त चमक्किय चिंतव ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस्स किरण सामी वीर जिण, पेखिअ रूव विसाल तो । एह असभव संभव ए, साचो ए इन्द्रजाल तो ॥ तो बोलावइ त्रिजग गुरु इन्द्रभूइ नामेण तो । श्री मुख संसय सामी सवे फेडे वेद पएण तो ॥ १६ ॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतिहिं नाम्यो सीस तो । पंच सयांसूं व्रत लियो ए गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनि-भूइ आवेय तो । नाम लेई आभास करे ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो । तो उपदेशे भुवन गुरु संयमसूं व्रत बार तो ॥ बिहुं उपवासे पारणो ए, आपणपे विहरंत तो । गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इन्द्रभूइ इन्द्रभूइ चढियो बहु मान, हूंकारो करि कंपतो । समवसरण पहुतो तुरंततो जे संसा सामि सवे ॥ चरमनाह फेडे फुरंत तो, बोधि

बीज सजाय मनें । गोयम भवहि विरत्त, दिक्खा लेई सिक्खा सही गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण आज पचेलिमा पुण्य भरो । दीठा गोयम सामि, जो निय नयणें अमिय झरो ॥ समवसरण मझार, जे जे संसय ऊपज ए । ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजें दीख, तिहां तिहां केवल ऊपज ए । आप कनें अणहुंत, गोयम दीजे दान इम ॥ गुरू ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय । अणचल केवल नाण, रागज राखे रङ्ग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सैल, वंदे चढ चउवीस जिन । आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इम देसणा निसुणेह गोयम गणहर सचरिय । तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अङ्ग, अम्हां सगति न उपज ए । किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुओ ए, अभिमान, तापस जो मन चिंतव ए । तो मुनि चढियो वेग, अलबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निष्पन्न, दण्ड कलस ध्वज वड सहिय । पेखवि परमानन्द, जिणहर भरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह विंब । पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक् जृंभक देव तिहां प्रतिबोध्या पुण्डरीक । कंडरीक अध्ययन भणी, चलता गोयम सामि ॥ सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ ।

चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खाँड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे । गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंच सयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे । साचा गुरु संयोग कवल ते केवल रूप हुए ॥ २६ ॥ पञ्च सयां जिननाह समवसरण प्राकारत्रय । पेखवि केवल नाण, उपन्नो उज्जोय कहे ॥ जाणे जिनवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम । जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ पंच सया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण सम्पन्न । पन्नरेसे परिवारिय, हरि दुरिय जिणनाह वदइ ॥ जाणेवि जग गुरु वयण, तिहि नाण अप्पण निदइ । चरम जिनेसर इम भणे, गोयम मकरिस खेव, छेह जाय आपण सही होस्यां तुल्लावेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिनन्द, पूनमचन्द जिम उल्लसिय । विहरियो ए भरहवासम्मि वरस वहुत्तर संवसिय ॥ ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघे सहिय । आवियो ए नयणानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेसियो ए गोयम सामि, देव समा प्रतिबोध करे । आपणो ए तिसला देवि, नन्दन पहुतो परमपए ॥ वंदतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समो ए तो मुनि ए मन विषवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि आप कनासूं टालियो ए । जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अति भलो ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मांग से ए । चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केडे लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिनन्द, भगतिहि भोले

भोलव्यो ए। आपणो ए ऊचलो नेह, नाऽ न संपे सांचव्यो ए॥ साचो ए वीतराग, नेह न हेजेंलालियो ए। तिणसम ए गोयम चित्त, राग वैरागें वालियो ए॥ ३५॥ आवतो ए जो उल्लट, रहितो रागे साहियं ए। केवल ए नाण उप्पन, गोयम सहिज उमाहियो ए॥ तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए। गणधर ए करय वखाण भविया भव जिम निस्तर ए॥ ३६॥ वस्तु॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास गिहवासें संवसिय। तीस वरस संयम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण॥ बार बरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो। बाणवाइ बरसाओ सामी गोयम गुण नीलो होसे शिवपुर ठाओ॥ ३७॥ भास॥ जिम सहकारे कोयल टहुके जिम कुसुमावन परिमल महके। जिम चन्दन सोगन्ध निधि, जिम गंगाजल लहिरथा लहके॥ जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि॥ ३८॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरु वर कणय वतंसा। जिम महुयर राजीव वनें, जिम रयणायर रयणें विलसे॥ जिम अम्बर तारागण विकसे तिम गोयम गुरु केवल घनें॥ ३९॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिस जिम सहस करो॥ पञ्चानन जिम गिरिवर राजे, नर वई घर जिम मयगल गाजे। तिम जिन शासन मुनि॥ पवरो॥ ४०॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा। जिम

वन केतकि महमहे ए, जिम भूमीपति भुयवल चमके ॥ जिम जिन मन्दिर घण्डा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिन्तामणि कर चढ़ियो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज । काम कुम्भ सहु वशि हुआ ए, कामगवी पूरे मन कामी ॥ अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरि ए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजे, माया बीजो श्रवण सुणीजे । श्रीमति सोभा सम्भवो ए, देवां धुर अरहिंत नमीजे ॥ विनय पहु उवझाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पर घर वसतां काय करीजे, देश देशांतर काय भमीजे । कवण काज आयास करो, प्रह ऊठी गोयम समरीजे ॥ काज समग्गल ततखिण सीजे, नव निधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदय सय बाहोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे । कियो कवित उपगार करो, आदिहि मंगल ए पभणीजे ॥ परव महोच्छव पहिलो दीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिन कुल अवतरियो । धन्य सुगुरु जिन दीखियो ए विनयवन्त विद्या भण्डार तसु गुण पहुवि न लब्भइ पार ॥ वड़ जिम साखा विस्तरो ए, गोयम स्वामि नो रास भणीजे । चउविह संघ रलियायत कीजे, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चन्दन छडो दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो । रयण सिंहासण बेसणो ए, तिहां बेसी गुरु देसना देसी ॥ भविक जीवना

काज सरेसी, नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥

राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर । भूखां भोजन संपजे कुरला करे कनूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार । जे गुरु गौतम समरिये, मन वंछित दातार ॥ २ ॥ ग्राम तणे पैशाल डे, गुरु गौतम समरन्त । इच्छा भोजन वर कुशल, लच्छी लील करन्त ॥ ३ ॥ पुण्डरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण सम्पन्न । प्रह ऊठीने प्रणमतां, चवदेसे बावन्न ॥ ४ ॥ खन्ति खमगुणकलियं, सुविणियं सव्वलद्धि सम्पण्णां । वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसामी ॥ ५ ॥ सर्वारिष्ट प्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने । सर्वलब्धि निधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ६ ॥

श्री शत्रुञ्जय रास

॥ दोहा ॥

श्री रिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनन्द । रास भणूं रलिया मणो, शत्रुञ्जय सुख कंद ॥ १ ॥ संवत् चार सतोतरे, हुए धनेश्वर सूरि । तिण शत्रुञ्जय महातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिनन्द समवसर्‌या, शत्रुञ्जय ऊपर जेम । इन्द्रादिक आगल कह्यो, शत्रुञ्जय महातम एम ॥ ३ ॥ शत्रुञ्जय तीरथ सरिखो, नहीं छे तीरथ कोय । स्वर्ग मृत्यु पाताल में, तीरथ सगला जोय ॥ ४ ॥ नामे नव निधि संपजे, दीठा दुरित पुलाय । भेटंता भव भय टले,

सेवंता सुख थाय ॥ ५ ॥ जम्बू नामे दीपए, दक्षिण भरत मझार। सोरठ देश सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ राग रामगिरी ॥

शत्रुञ्जय ने श्री पुण्डरीक, सिद्धक्षेत्र कहूं तहतीक । विमलाचलने करूं परणाम, ए शत्रुञ्जयना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरने महागिरि पुण्य राश, श्री पद पर्व्वत इन्द्र प्रकाश। महा तीरथ पूरवे सुख काम ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वतने दृढ शक्ति, मुक्ति निलो तिण कीजे भक्ति। पुष्पदन्त महापद्म सुठाम ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वी पीठ सुभद्र कैलाश, पाताल मूल अकर्मक ताश। सर्व काम कीजे गुण ग्राम ॥ ४ ॥ श्री शत्रुञ्जयना इकवीस नाम, जपेजे बैठा अपने ठाम। शत्रुञ्जय यात्रानो फल लहे, महावीर भगवन्त इम कहे ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

शत्रुञ्जय पहले अरे, अस्सी जोयण परिमान । पिहुलो मूल ऊंचोपणे छव्वीस जोयण जांण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जांणवो, बीजे अरे विसाल। बीस जोयण ऊंचो कह्यो, मुझ वन्दना त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पहिलो तीरथ राय । सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यान धरूं चित्त लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण चौथे अरे मझार। ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूल तणे विस्तार । दो जोयण ऊंचो अछे, शत्रुञ्जय तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ छट्ठे आरे,

पिहुलो परवत एह । ऊंचो होसी सौ धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

केवल ज्ञानी प्रमुख तीर्थंकर, अनन्त सीधा इण ठाम रे। अनन्त वली सिमस्ये इण ठामे, तिन करूं नित परनाम रे ॥ १ ॥ शत्रुञ्जय साधु अनन्ता सीधा, सीमसी वलिय अनन्त रे । जिन शत्रुञ्जय तीरथ नहिं भेट्यो, ते गरभावास कहन्त रे ॥ श० २ ॥ फागुन सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे । रायणरूंख समवसर्या स्वामी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ ३ ॥ भरत पुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शत्रुञ्जय गिरि आय रे। पांच कोडी सूं पुण्डरीक सीधा, तिन पुण्डरीक कहाय रे ॥ ४ ॥ नमि विनमी राजा विद्याधर, बे कोडी संघात रे । फागुन सुदि दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमूं परभात रे ॥ ५ ॥ चैत्र मास वदि चौदस ने दिन, नमि पुत्री चउसट्ठि रे । अणसण कर शत्रुञ्जय गिरि ऊपर, ए सहु सीधा एकट्ठि रे ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्राविड़ने वारिखिल्ल रे । काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोडी सूं मुनि सल्ल रे ॥ ७ ॥ पांचे पांडव इण गिर सीधा, नव नारद ऋषिराय रे। संब प्रज्जुम्न गया रहां मुगते, आठूं कर्म खपाय रे ॥ ८ ॥ नेमि बिना तेवीस तीर्थंकर समवसर्या गिरि शृङ्ग रे । अजित शान्ति तीर्थंकर बेहू, रह्या चौमासे सुरङ्ग रे ॥ ६ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चा सुत साथ रे ।

पांच से साधु सो सेलग मुनिवर, त्रुञ्जय शिव सुख लाध रे ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि शत्रुञ्जय सीधा, भरतेसरने पाट रे । राम अने भरतादिक सीधा, मुक्ति तणी ए वाट रे ॥ ११ ॥ जालि मयालीने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोडि रे । साधु अनन्ता शत्रुञ्जय सीधा, प्रणमूं वे करजोड़ि रे ॥ १२ ॥

[ढाल]

शत्रुञ्जय कहुँ सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार। सुनन्ता आनन्द अङ्ग न माय, जनम जनमना पातक जाय ॥ १ ॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी, समवसर्या स्वामी हित करी । भरत गयो वन्दनने काज, ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जग मांहे मोटा अरिहन्त देव, चौसठ इन्द्र करे जसु सेव । तेहथी मोटो सघ कहाय, जेहने प्रणमें जिनवर राय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, भरत भरत सुनीने मन गह गह्यो । भरत कहे ते किम पांमिये, प्रभु कहे शत्रुञ्जय यात्रा किये ॥ ४ ॥ भरत कहे संघवीपद मुझ, थे आपो हूँ अङ्गज तुझ । इन्द्रे आण्या अक्षत वास, प्रभु आपे संघवी पद तास ॥ ५ ॥ इन्द्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा बिहुंने माल । पहिरावी घर संचेडिया सकल सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ ऋषभदेवनी प्रतिमा वली , रत्न तणी दीधी मन रली । भरते गणधर घर तेडिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देस, भरत तेड़ाया

संघ असेस । आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथम थकी रथयात्रा करी
॥ ८ ॥ संघ भक्ति कीधी अति घणी, संघ चलायो शत्रुञ्जय भणी ।
गणधर वाहुवलि केवली, मुनिवर कोड साथे लिया वली ॥ ६ ॥ चक्र-
वर्त्तिनी सवली ऋद्धि, भरते साथे लीधी सिद्ध । हयगय रथ पायक
परिवार, ते तो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कहवाय,
मारग चैत्य उध-तो जाय । संघ आयो शत्रुञ्जय पास, सहुनी पूगी
मननी आस ॥ ११ ॥ नयने निरख्यो शत्रुञ्जय राय, मणि माणिक
मोत्यांसू वधाय । तिण ठामे रहि महोच्छव कियो, भरते आनन्द पुर-
वासियो ॥ १२ ॥ संघ शत्रुञ्जय ऊपर चढ्यो, फरसन्ता पातक झड़
पहुँचो केवल ज्ञानी पगला तिहां, प्रभम्यां रायण रूंख छे जिहां
॥ १५ ॥ केवल ज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेन्द्र आणी सुपवित्त । नदी
शत्रुञ्जय सोहामनी, भरतें दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधर देव
तने उपदेश, इन्द्रे वलि दीधो आदेश । श्री आदिनाथ तनो देहरो,
भरत करायो गिरिसेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी
प्रतिमा मनरङ्ग । भरते श्री आदीसरतणी, प्रतिमा थापी सोहामणी
॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली । ब्राम्ही
सुन्दरि प्रमुख प्रासाद, भरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक
प्रतिमा प्रसाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद । भरत तणो पहिलो उद्धार
सगलोही जाने संसार. ॥ १८ ॥

[राग सिन्धोडो आशावरी]

भरत तने पाट आठ मे , गडवीरज थयो रायोजी । भरत तनो पर संघ कियो, शत्रुञ्जय संघवि कहायोजी ॥ १ ॥ शत्रुञ्जय उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्री कारोजी । असंख्यात बीजा वली, तेन कहूं अधिकारोजी ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो बिम्ब सारोजी. मूलगो बिब भण्डारियो, पच्छिमदिसि तिण बारोजी ॥३॥ शत्रुञ्जयनी यात्रा करी, सफल कियो अवतारोजी । दण्डवीरज राजा तणो, ए बीजो उद्धारोजी ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यति क्रम्या, दण्डवीरज थी जीवा-डोजी । ईशानेन्द्र करावियो, ए तीजो उद्धारोजी ॥ ५ ॥ चौथा देव-लोकनो धणी माहेन्द्र नाम उदारोजी । तिण शत्रुञ्जयनो करावियो, ए चौथो उद्धारोजी ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी ब्रह्मेन्द्र समकित धारोजी । तिण शत्रुञ्जय करावियो, ए पांचमो उद्धारोजी ॥ ७ ॥ भुवनपति इन्द्रनो कियो, ए छट्ठो उद्धारोजी । चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारोजो ॥ ८ ॥ अभिनन्दन पासे सुन्यो, शत्रुञ्जय नो अधिकारोजी । व्यन्तर इन्द्र करावियो, ए आठमो उद्धारोजी ॥ ९ ॥ चन्द्र प्रभु स्वामिनो पोतरो, चन्द शेखर नाम मल्हारोजी । चन्द्रयशराय करावियो ए नवमो उद्धारोजी ॥ १० ॥ शान्तिनाथनी सुणि देशना, शान्तिनाथ सुत सुविचारीजी । चक्रधर राय करावियो, ए दशमो उद्धा-रोजी ॥ ११ ॥ दशरथसुत जगदीपतो, मुनि सुव्रत स्वामी वारोजी ।

श्री रामचन्द्र कराविथो, ए ग्यारमो उद्धारोजी ॥ १२ ॥ पाण्डव कहे इहे पापिया, किम छूटे मेरी मायोजी, कहे कुन्ती शत्रुञ्जय तणी, यात्रा कियां पाप जायोजी ॥ १३ ॥ पांचे पांडव सघ करी शत्रुञ्जय, भेट्यो अपारोजी । काष्ठ चैत्य विम्ब लेपना ए बारमो उद्धारोजी ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुन्दर सरूपोजी । श्री शत्रुञ्जयनो सघ करी, थापी सकल सरूपोजी ॥ १५ ॥ अट्ठोत्तर सौ वरसां गयां । विक्रम नृपति जिवारोजी । पोरवाड जावड कराविथो, ए तेरमो उद्धारोजी ॥ १६ ॥ सम्वत् बार तिडोतरे श्रीमाली, सुविचारोजी । बाहडदेह मुंहतें कराविथो, ए चवदमो उद्धारोजी ॥ १७ ॥ सम्वत् तेरे इकोत्तरे देसलहर अधिकारोजी । समरे साह कराविथो, ए पनरमो उद्धारोजी ॥ १८ ॥ सम्वत् पनर सत्यासिये, वैसाख वदि शुभ वारोजी । करमे डोसि कराविथो, ए सोळमो उद्धारोजी ॥ १९ ॥ सम्प्रति काले सोळमो ए वरते छे उद्धारोजी । नित नित कीजे वन्दना, पांमीजे भव पाराजी ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

वलि शत्रुञ्जय महातम कहूं, सांभलो जिम छे तेम । सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, शत्रुञ्जय पूजनीक । भगवन्तनो वेष मांनतां, लाभ हुए तहतीक ॥ २ ॥ श्री शत्रुञ्जय ऊपरे, चैत्य करावे जेह । दल परमांन समो लहे, पल्यो-

पंम सुख तेह ॥ ३ ॥ शत्रुञ्जय ऊपर देहरो, नवो नीपादे कोय। जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार। चक्रवर्त नी स्त्री थई, शिव सुख पासे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम शत्रुञ्जय, चढिने करे उपवास । नारकी सौ सागर समो करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परव मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोड़। ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे छोड़ ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक भणी; भोजन पुण्य विशेष । शत्रुञ्जय साधु पड़िला भता अधिको तेहथी वेष ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥

शत्रुञ्जय गयां पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमो जी। तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमोजी ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासोजी। चैत्रे दिन शत्रुञ्जय चढी, एक करे उपवासोजी ॥ २ ॥ वस्तुतनी चोरी, सात आंबिल शुद्ध थायोजी। काती सात दिन तप कियां रतन हरन पाप जायोजी ॥ ३ ॥ कांसी पीतल, तांबा रजतनी, चोरी कीधी जेणो जी । सात दिवस पुरिमड्ढ करे, तो छूटे गिरी एणोजी ॥ ४ ॥ मोती, प्रवाला, मूंगया, जिण चोर्‌या नर नारोजी । आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टङ्क शुद्ध आचारोजी ॥ ५ ॥ धान, पानी रस चोरिया, ते भेठे सिद्ध क्षेत्रोजी। शत्रुञ्जय तलहटी साधु नें, पडिलाभें सुध चित्तोजी ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण

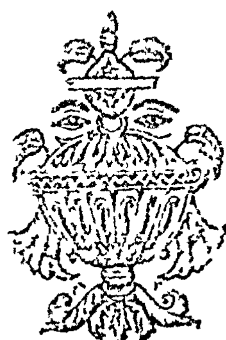
जिने हरथा, ते छूटे इण मेलोजी। आदिनाथ नी पूजा करे, प्रह ऊठी बहु वेलोजी ॥ ७ ॥ देव गुरु नो धन जेहरे, ते शुद्ध थाये एमोजी। अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोपे बहु प्रेमोजी ॥८॥ गाय भैस घोड़ा मही, गज ग्रह चोरन हारोजी। देते वस्तु तीरथे, अरिहन्त ध्यान प्रकारोजी ॥ ९ ॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे आपनो नामोजी। छूटे छम्मासी तप कियां सामायिक तिन ठामोजी ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजका, सधव, विधव गुरु नारोजी। व्रत भांजे तेहने कह्यो, छम्मासी तप सारोजी ॥ ११ ॥ गो, विप्र, स्त्री, बालक, ऋषि, एहनो घातक जे होजी। प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप कर तेहो जी ॥ १२ ॥

[ढाल]

सम्प्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धार। शत्रुञ्जय यात्रा करूं ए, सफल करूं अवतार ॥ १ ॥ छहरी पालतां चालिये ए, शत्रुञ्जय केरी वाट। पालीताणे पहुँचिये ए, संघ मिल्या बहु थाट ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्तानी वावि। तिहां विसरामो लीजिये ए, वड़ने चौतरे आवि ॥ ३ ॥ पालीताणे पांजड़ी ए, चढ़िये उठ परभात। शत्रुञ्जय नदिय सोहामणि ए, दूर थकी देखंत ॥ ४ ॥ चढ़िये हिङ्गलाजने हडे ए, कलि कुंड नमिये पास। बारी मांहे पेसिये ए, आनी अंग उल्लास ॥ ५ ॥ मरुदेव टुंक मनोहरु ए, गज चढ़ मरु–

देवी माय। शान्तिनाथ जिन सोलमो ए, प्रणमी जे तसु पाय॥ ६ ॥ वंश पोरवाडे परगड़ो ए, सोमजी साहमलार । रूपजी संघवी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा चरचिये ए, भमती मांहे भला बिम्ब। पांचे पाण्डव पूजिये ए, अद्भुत आदि प्रलम्ब ॥ ८ ॥ खरतर वसही खंतसूं ए, बिम्ब जुहारू अनेक। नम-नाथ चवरी नमूं ए, टारूं अलग उदेग ॥ ९ ॥ धरम दुवार मांहि नीसरूं ए, कुगति करूं अति दूर। आऊं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ १० ॥ मूल नायक प्रणमूं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत। देव जुहारूं देहरे ए, भमती मांहे भमंत ॥ ११ ॥ शत्रुञ्जय ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र। कलश अठोत्तर सूं करिये ए, निरमल नीरसूं गात्र ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगले ए, पुण्डरीक गणधार। रायण तल पगला नमूं ए, शान्तिनाथ सुखकार ॥ १३ ॥ रायण तल पगला नमुं ए, चौमुख प्रतिमा चार। बीजी भूमि बिम्बावली ए, पुण्डरीक गणधार ॥ १४ ॥ सूरज कुण्ड निहालिये ए, अति वली उलका भोल। चेलण तलाई सिद्ध शिला ए, अंग फरसूं उल्लोल ॥ १५ ॥ आदिपुर पाजे ऊतरूं ए, सिद्ध वडलू विसराम। चैत्य प्रवाडी इण पर करी ए, सीधा वंछित काम ॥ १६ ॥ यात्रा करी शत्रुञ्जय तणी ए, सफल कियो अवतार। कुशल क्षेम सूं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ १७ ॥ शत्रुञ्जय रास सोहामणो ए, सांभलज्यो सहु

होय। घर बैठां भणे भाव सूं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ १८ ॥ संवत सोल बयासिये ए, श्रावण वदि सुखकार। रास रच्यो शत्रुञ्जय तणो ए, नगर नागोर मझार ॥ १९ ॥ गिरुवो गच्छ खरतर तणो ए, श्री जिनचन्द सूरीस। प्रथम शिष्य श्री पूजना ए, सकलचन्द सुजगीस ॥ २० ॥ तास सीस जग जांणिये ए, समय सुन्दर उवझाय। रास रच्यो तिण रूवडो ए, सुणतां आनन्द थाय ॥ २१ ॥



समाप्त